26

प्रारंभिक बचपन में वैकासिक संरचना

जन्म से लेकर पूर्णत् विकसित वयस्क बनने तक एक मानव के विकास के विषय ने युगों से लोगों को आकर्षित किया है। यह ज्ञान न केवल स्वयं को समझने में उपयोगी है बल्कि यह बच्चे के विकास के लिए मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आपके लिए संभव होगाः

- मानव जीवन काल के स्तरों की सूची तैयार करना;
- विकास की विभिन्न प्रक्रियाओं की रूपरेखा तैयार करना;
- वद्धि तथा विकास के प्रतिमानों (पैटर्न) का वर्णन करना;
- विकास को प्रभावित करने वाली विभिन्न विशेषताओं (लक्षणों) का वर्णन करना; तथा
- प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चे की विशेषताओं का उल्लेख करना।

26.1 जीवन काल के स्तर

सम्पूर्ण जीवन काल के संदर्भ में यदि हम इसके विभिन्न स्तरों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे तो हम मानव विकास को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे। मानव जीवन काल को निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया जा सकता हैः

1. प्रसवपूर्व अवधि– गर्भधारण से जन्म तक

2. नवजात की अवधि– जन्म से एक महीने तक
3. शैशव– 1 महीने से 2 वर्ष तक
4. प्रारम्भिक बाल्यावस्था – 2 वर्ष से 6 वर्ष तक
5. मध्य बाल्यावस्था– 6 वर्ष से 11 वर्ष तक
6. किशोरावस्था– 11/12 वर्ष से 18/19 वर्ष तक
7. प्रारम्भिक वयस्कावस्था– 18/19 वर्ष से 40 वर्ष तक
8. अधेड़ आयु– 40 से 60 वर्ष तक
9. वद्धावस्था – 60 से ऊपर

26.2 विकास के प्रतिमान

विकास, जिसका वास्तविक रूप से अर्थ अनेक प्रक्रियाओं शारीरिक, सामाजिक, तथा संज्ञानात्मक के मध्य जटिल अंतक्रियाओं के परिणाम है।

1. **शारीरिक (जैविक) प्रक्रियाएं:** व्यक्ति के रूप–रंग में परिवर्तन प्राकतिक है। इन प्रक्रियाओं में शारीरिक परिवर्तन शामिल है। हमारी आनुवंशिक विरासत, शारीरिक इंद्रियों का विकास, क्रियात्मक कौशलों यथा साइकलिंग, ड्राइविंग, लेखन आदि में निपुण होना, हार्मोनल परिवर्तन जैसे मूछें आना, यौनारंभ में भार का बढ़ना, ये सब विकास में जैविक प्रक्रियाओं की भूमिका को दर्शाते हैं।
2. **ज्ञानात्मक प्रक्रियाएं:** इन प्रक्रियाओं में विचारों, बुद्धिमत्ता तथा बच्चे की भाषा में परिवर्तन शामिल हैं। प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, जानना, समझना, समस्या समाधान करना,याद करना, कल्पना करना, ये सभी ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को दर्शाते हैं।
3. **सामाजिक प्रक्रियाएं:** इन प्रक्रियाओं में अन्य लोगों के साथ बच्चे के सम्बन्धों में, उसकी भावनाओं तथा व्यक्तित्व में परिवर्तन शामिल हैं। शिशु की पहली मुस्कान, मां तथा बच्चे के मध्य लगाव का विकास, बच्चे द्वारा अपने सामान, पारी तथा अन्यों के साथ खेल में बांटना सीखना; ये सब सामाजिक प्रक्रियाओं को दर्शाते हैं।

स्वयं करके देखें: बच्चे में ज्ञानात्मक, सामाजिक तथा जैविक प्रक्रियाओं के 10 उदाहरणों की एक सूची तैयार कीजिए।

पाठगत प्रश्न 26.1

निम्नलिखित का मिलान करें:

क	ख
(i) नवजात	(क) लम्बाई में वद्धि
(ii) किशोरावस्था	(ख) 2-6 वर्ष

टिप्पणी

(iii) प्रारम्भिक व्यस्कावस्था	(ग) 18/19 वर्ष से 40 वर्ष
(iv) प्रारम्भिक बाल्यावस्था	(घ) दोस्त बनाना
(v) ज्ञानात्मक प्रक्रिया	(ङ) जन्म–एक महीने तक
(vi) सामाजिक प्रक्रिया	(च) देखना तथा पलटना हिलना
(vii) जैविक प्रक्रिया	(छ) 11–12 वर्ष से 18–19 वर्ष

26.3 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में वद्धि तथा विकास

वद्धि तथा विकास सम्पूरक प्रक्रियाएं हैं। वद्धि शरीर में मात्रात्मक परिवर्तनों को दर्शाती है जैसे भार तथा लम्बाई। इसके विपरीत विकास से तात्पर्य गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन शामिल हैं (यथा भाषा ग्रहण)।

विकास को ''सुव्यवस्थित सुसंगत परिवर्तनों की प्रगतिशील श्रंखला'' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

विभिन्न प्रकार के विकासात्मक परिवर्तन विभिन्न सिद्धान्तों का अनुसरण करते हैं। इनमें से कुछ सिद्धान्त निम्नानुसार हैं:

1. वद्धि तथा विकास सुव्यवस्थित अनुक्रम का अनुसरण करते हैं
2. प्रत्येक बच्चा सामान्यतः अनेक स्तरों से गुजरता है तथा प्रत्येक की अपनी अनिवार्य विशेषताएं होती हैं।
3. विकास की दर व प्रतिमान में व्यक्तिगत रूप से अन्तर होता है।
4. यद्यपि मनुष्य एकीकत इकाई के रूप में विकसित होता है किन्तु उसके शरीर का प्रत्येक भाग भिन्न दर से विकसित होता है। मूल रूप से विकास की दर की दो श्रंखलाएं होती हैं:

   (क) मस्तकाभोमुखी (सिफिलोकोडल) अर्थात सिर से पैर तक विकास प्रक्रियाएं। इस प्रकार पहले सिर व मस्तिष्क विकसित होगा।

   (ख) समीप-दूराभिमुखी (प्रॉक्सीमोडिस्टल) केन्द्र से अन्तिम छोरों तक (साइड की ओर) इस विकास के अंतर्गत बच्चा सर्वप्रथम अपनी रीढ़ पर नियंत्रण प्राप्त करता है उसके बाद हाथ व उंगलियों पर।

5. विकास अनिवार्य रूप से परिपक्वन तथा सीखने के मध्य अंतक्रिया का परिणाम है। जहां परिपक्वन का अर्थ ''व्यक्ति के अनुवंशिक प्रतिभा में प्रस्तुत उपयुक्त सम्भावित विशेषताओं'' से है वहीं सीखने से तात्पर्य संबंधित प्रयासों से है, वे परिवर्तन जो अनुभव तथा प्रयास के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं।

टिप्पणी

स्वयं करके देखें:

दो तथा चार वर्ष की आयु के बच्चों के स्थूल (सधन) गतिक कौशलों (यथा दौड़ना, उछलना, सीढ़िया चढ़ना, कूदना) तथा सूक्ष्म गतिक कौशलों (ग्रहण करना, चिपकाना, चम्मच से खाना, गिठांक बांधना, बाल बनाना, बटन लगाना, बटन खोलना आदि) का अवलोकन करें। इन कौशलों के विकास के क्रम की पहचान कीजिए। इन कौशलों में प्रत्येक में विकास में परिपक्वन तथा सीखने की तुलनात्मक भूमिका का पता लगाइए।

26.4 वद्धि तथा विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1. **वंशानुगतः** वंशानुगत से तात्पर्य जो हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त होता है। इससे इस तथ्य का निर्धारण होता है कि हम कितने लम्बे या भारी हो सकते हैं। इस प्रकार, वंशानुगत हमारे शरीर के आकार, हमारी बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ अनेक शारीरिक, मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक, सामाजिक व्यवहारात्मक गुणों का निर्धारण करता है।

2. **प्रसवपूर्व वातावरणः** गर्भावस्था के दौरान का वातावरण, बाद के विकास का एक महत्वपूर्ण कारक होता है। यदि मां को इस दौरान अच्छा पोषण प्राप्त नहीं होता है या वह भावात्मक रूप से दुखी रहती है या धूम्रपान या शराब, या किसी अन्य दवा का सेवन करती है या विशिष्ट प्रकार की बीमारियों से पीड़ित है तो इन तथ्यों का बच्चे के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

3. **पोषणः** एक बच्चे के स्वस्थ विकास के लिए उचित पोषण अनिवार्य है। एक कुपोषणयुक्त बच्चे का विकास या तो अवरुद्ध या विक्रत होता है।

4. **मानसिक स्तरः** तीव्र बुद्धि का संबंध तीव्र विकास से है जबकि निम्न बुद्धि का संबंध विकास के विभिन्न पहलुओं में पिछड़ने से है। शरीर व बुद्धि का आपस में गहरा संबंध है जैसे कहावत भी है कि ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ बुद्धि का वास होता है''

5. **घर का भावात्मक वातावरणः** यदि घर में अत्यधिक द्वेष/लड़ाई होती है या बच्चे को पर्याप्त स्नेह या ध्यान नहीं दिया जाता है या बच्चे को शारीरिक/मानसिक रूप से उत्पीड़ित किया जाता है तो इससे बच्चे के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। परिवार के अन्य सदस्यों के साथ आपके स्नेह, धैर्य या आदरपूर्ण व्यवहार से बच्चे पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

6. **बच्चे का स्वास्थ्यः** यदि बच्चा बार–बार बीमार पड़े या किसी विकति का शिकार हो जाता है या अपंग है या अव्यवस्थित अंतःस्त्रावी क्रिया, तो उससे बच्चे का विकास प्रभावित होगा। किसी प्रकार की आन्तरिक शारीरिक विकति भी बच्चे के विकास को प्रभावित करती है।

टिप्पणी

7. **उद्दीपन का स्तरः** एक वातावरण द्वारा उपलब्ध उद्दीपन की मात्रा, वातावरण के अन्वेषण के अवसर, अन्य लोगों के साथ अन्तःक्रिया के अवसर– सभी विकास की दर को प्रभावित करते हैं। उद्दीपन से तात्पर्य कोई भी वस्तु जो व्यक्ति को क्रिया करने पर मजबूर करती है।

8. **सामाजिक-आर्थिक स्थितिः** यह बच्चे को प्राप्त होने वाले पोषण, उद्दीपन, सुविधाओं तथा अवसरों के प्रकार, को निर्धारित करती है और इसलिए उस बच्चे के विकास की दर को प्रभावित करता है।

9. **यौनः** सभी बच्चे विकास के समान क्रम का अनुसरण करते हैं। बहरहाल, कुछ कौशल लड़कियों में (जैसे भाषा विकास) जल्दी विकसित होते हैं तो कुछ लड़कों में। यौन भी एक कारक है जो कभी–कभी विकास के कुछ पहलुओं में बच्चे की सम्भावनाओं (क्षमताओं) का निर्धारण करता है जैसे लड़के लड़कियों की अपेक्षाकत लम्बे एवं वचन में अधिक भारी होते हैं।

पाठगत प्रश्न 26.2

बताएं कि निम्नलिखित वाक्य सत्य हैं या असत्यः

1. विकास हमेशा एक ही दर पर होता है। सत्य/असत्य
2. विकास केवल वातावरण से ही प्रभावित होता है। सत्य/असत्य
3. बद्धि और विकास दोनों एक ही अवधारणा है। सत्य/असत्य
4. सामान्यतः विकास एक ही क्रम का अनुसरण करता है। सत्य/असत्य
5. गर्भवती महिला का स्वास्थ्य बच्चे के विकास को प्रभावित करता है। सत्य/असत्य
6. दाम्पत्य विकति बच्चे के विकास को प्रभावित कर सकती है। सत्य/असत्य
7. जितना अधिक बच्चे को वातावरण के समीप जाने दिया जाएगा, बच्चे का विकास उतना ही कम होगा। सत्य/असत्य
8. हमारे सीखने की क्षमता का निर्धारण वंशानुगत आधार पर होता है। सत्य/असत्य

26.5 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में विकास की विशेषताएं

जैसे कि पहले उल्लेख किया जा चुका है प्रारम्भिक बाल्यावस्था की अवधि 2 वर्ष से 6 वर्ष की आयु के मध्य की होती है। कभी–कभी इस अवधि को प्रग्विद्यालयी अवधि भी कहते हैं। इस स्तर में बच्चे अधिक आत्मनिर्भर हो जाते हैं, अपना ध्यान रखने लगते हैं, भाषा को सीखने लगते हैं, समूह का भाग बनने लगते हैं, अधिक सुव्यवस्थित हो जाते हैं,

स्कूल की तैयारी के कौशल विकसित करने लगते हैं (निर्देशों का अनुपालन करना, अक्षरों को पहचानना आदि) तथा उच्च स्तर का स्वःनियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं।

(क) ज्ञानात्मक विकास के लक्षण

- यह विश्वास करना कि संसार विद्यमान है, चाहे वह स्वयं उसे देख न सके (वस्तु स्थायित्व)
- अन्यों का परिप्रेक्ष्य (विचार) को न देख पाना (आत्मकेन्द्रित)
- तर्कसंगत विचारों का अभाव।
- यह धारणा रखना कि सभी वस्तुएं (जीवित तथा अजीवित) में जीवन तथा भावनाएं विद्यमान हैं।
- कल्पनाओं में लिप्त रहना तथा अपनी धारणाओं के साथ खेलना।
- सतही रूप से नजर आने वाली अवधारणाओं से सरलता से भ्रमित होना।
- अकेन्द्रित ध्यान
- सीमित स्मरण शक्ति
- सामान्य संबंधों के विषय में भ्रमित
- रंग, आकार, आकति, संख्या, दिनों आदि की मूल अवधारणा को ग्रहण करना।
- उच्च स्तर की उत्सुकता
- दो शब्दों से पूरे वाक्य तक तथा व्याकरणिक प्रयोगों के साथ भाषा में परिवर्तन।

(ख) शारीरिक विकास के लक्षण

दो वर्ष की आयु परः एक बच्चा

- एक बच्चे का भार 23-30 पाउंड, तथा लम्बाई 32-35 इंच होती है।
- आंतों की क्षमता तथा मूत्राशय पर नियंत्रण
- दौड़ सकता है, बॉल को लात मार सकता है तथा 3 क्यूब की मंजिल बना सकता है।

2-3 वर्ष की आयु पर

- बच्चे का भार 32-33 पाउंड हो जाता है तथा उसकी लम्बाई 37-38 इंच हो जाती है।
- सीढ़ियों से छलांग लगा सकता है, ट्राइसाइकल चला सकता है, एक आठ क्यूब वाला टावर खड़ा कर सकता है आदि।

3-4 वर्ष की आयु पर

- बच्चे का भार 30-40 पाउंड तथा उसकी लम्बाई 40-41 इंच हो जाती है।

टिप्पणी

- घर में अनेक दैनिक कार्यों में आत्म निर्भर हो जाता है जैसे कपड़े पहनना।
- एक पैर पर खड़ा हो सकता है ऊपर–नीचे छलांग लगा सकता है, गोल व क्रास के आकार को बना सकता है।

4-5 वर्ष की आयु पर

- बच्चे का वजन 42-43 पाउंड तथा लम्बाई 43-44 इंच हो जाती है।
- परिपक्व मोटर नियंत्रण आ जाता है, स्किपिंग, स्वयं कपड़े बदलना, लम्बी छलांग लगाना, चौकोर या त्रिकोण आकार को बना पाता है।

(ग) संवेगात्मक विकास के लक्षण

2 वर्ष की आयु पर

- झल्लाहट भरा क्रोध दर्शाता है
- नए शिशुओं (यदि हों) से नाराज रहता है।
- नकारात्मक प्रवति होती है।

2-3 वर्ष की आयु पर

- अन्यों से अलग होने का भय होता है ।
- नकारात्मक प्रवति होती है।
- क्रोध, दुख तथा हर्ष के लिए भिन्न भिन्न चेहरे बनाता है
- विनोद प्रवति उत्पन्न करता है।

3-4 वर्ष की आयु पर

- माता पिता के प्रति स्नेह दर्शाता है
- जननिक हस्तलाथव में आनन्द प्राप्त करता है
- अंधेरे, राक्षस, चोट आदि का काल्पनिक भय होता है।

4-5 वर्ष की आयु में

- जिम्मेदारी तथा ग्लानि के अहसास का अनुभव करता है
- उपलब्धियों में गर्व का अनुभव करता है।

(घ) सामाजिक विकास के लक्षण

2 वर्ष की आयु पर

- जो करने को कहा जाए उसका विपरीत करता है

2-3 वर्ष की आयु पर

- माता पिता की क्रियाओं की नकल करता है

- आश्रित होता है, लिपटता है
- स्वत्वबोधक होता है
- बच्चें के साथ खेलना पसंद करता है

3-4 वर्ष की आयु में

- दूसरों के साथ बांटना सीखता है
- अन्य बच्चों के साथ समन्वय (सहयोग) के साथ खेलता है
- नर्सरी स्कूल में प्रवेश करता है
- अपने समान 'लिंग अभिभावक' को पहचानने लगता है
- काल्पनित मित्र बना लेता है
- मानव शरीर में रुचि उत्पन्न होने लगती है
- अपनी यौन भूमिका क्रियाएं करने लगता है

4-5 वर्ष की आयु में

- अन्य बच्चों के साथ खेलने लगता है
- प्रतिस्पर्धी हो जाता है
- उचित यौन क्रियाओं को वरीयता देता है।

टिप्पणीः यह याद रखा जाना चाहिए कि ये सूचीबद्ध क्रियाएं मात्र उदाहरण स्वरूप हैं। विकास की अन्य अनेक अभिव्यक्तियां हैं तथा ये सभी एक दूसरे से संबंधित हैं।

पाठगत प्रश्न 26.3

बताएं कि विकास के किस क्षेत्र में प्रत्येक निम्नलिखित आते हैं:

1. समन्वय (सहायक) खेल
2. ग्लानी
3. वस्तु स्थायित्व
4. यौन भूमिकाएं सीखना
5. अंधेरे का भय
6. काल्पनिक मित्र
7. उछलना व कूदना
8. काटना व चिपकना

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

जीवन चक्र के स्तर =
- प्रसवपूर्व
- नवजात
- शैशव
- प्रारम्भि बाल्यावस्था
- मध्य बाल्यावस्था
- किशोरावस्था
- वयस्कावस्था
- मध्य वयस्कावस्था
- वद्धावस्था

विकास की प्रक्रियाएं =
- जैविक
- ज्ञानात्मक
- सामाजिक

वद्धि तक विकास के सिद्धान्त =
- (i) सभी विकास संव्यवस्थित क्रम का अनुसरण करते हैं।
- (ii) विकास में व्यक्तिगत स्तर पर अन्तर
- (iii) शरीर के विभिन्न भाग भिन्न–भिन्न गति से विकसित होते हैं।
- (iv) परिपक्वन तथा अधिगम के मध्य अंतक्रिया के परिणामस्वरूप विकास होता है।
- (v) प्रत्येक बच्चे विकास के अनेक स्तरों से गुजरता है।

वद्धि तथा विकास को प्रभावित करने वाले कारक =
- बुद्धि
- वंशानुगतता
- प्रसवपूर्व वातावरण
- पोषण
- भावात्मक परिस्थिति
- स्वास्थ्य
- सामाजिक आर्थिक स्थिति
- यौन
- उद्दीपन का स्तर

प्रारम्भिक बाल्यावस्था की विशेषताएं =
- सामाजिक
- भावात्मक
- ज्ञानात्मक
- शारीरिक

पाठान्त प्रश्न

1. वद्धि तथा विकास के सिद्धान्तों की सूची बनाइए।
2. ऐसे दो बच्चों को लीजिए जो अपनी आयु से बड़ा है तथा दूसरा अपनी आयु के अनुसार छोटा है। उनके विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान कीजिए।
3. एक तीन वर्ष की आयु वाले बच्चे का एक हफ्ते के लिए मूल्यांकन कीजिए तथा उसकी सामाजिक, भावात्मक, शारीरिक तथा ज्ञानात्मक विकास की स्थिति की एक सूची तैयार कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1

(i) (ङ) (ii) (छ) (iii) (ग) (iv) (ख) (v) (च)
(iv) (घ) (vii) (क)

26.2

(1) गलत (2) गलत (3) गलत (4) सही (5) सही
(6) सही (7) गलत (8) सही

26.3

1. सामाजिक विकास
2. भावात्मक विकास
3. ज्ञानात्मक विकास
4. सामाजिक विकास
5. भावात्मक विकास
6. सामाजिक विकास
7. शारीरिक विकास
8. शारीरिक विकास

27

खेल केन्द्रः उद्देश्य

पिछले अध्याय में हमने प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चे की विशेषताओं तथा आवश्यकताओं से अवगत होने का प्रयास किया है। हमने देखा कि किस प्रकार आयु में परिवर्तन के साथ–साथ इन विशेषताओं में भी परिवर्तन होता है तथा शारीरिक रूप से विकसित होने पर बच्चे हर दष्टि से अपने आप को कैसे अधिक परिपक्व महसूस करते हैं। अब वे आसानी से इधर–उधर जा सकते हैं व उनकी मां के लिए आसानी हो जाती है। वे उत्सुक भी होते हैं और इसलिए वे नई बातों को जानना चाहते हैं और अनेक प्रश्न पूछते हैं। वह अन्य बच्चों में रुचि लेना आरंभ कर देता/देती है और उनके साथ रहना चाहता/चाहती है। क्या मां अपने बढ़ते हुए बच्चे की देखरेख के लिए पूरी तरह से तैयार है? क्या बच्चे की मदद की जा सकती है? इस स्तर पर बच्चे के लिए किस प्रकार के स्कूल का चयन किया जाना चाहिए? आदि ऐसे कुछ प्रश्न हैं जिनके उत्तर हम इस पाठ से प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात, आपके लिए सम्भव होगाः

- प्ले सैंटर को परिभाषित करना;
- एक प्ले सेंटर की आवश्यकता का वर्णन करना;
- एक प्ले सेंटर के उद्देश्यों का उल्लेख करना;
- प्ले सेंटर में बच्चे की देखरेख को समझना;
- बच्चों की व्यवहारात्मक समस्याओं से निपटना।

27.1 प्ले सेंटर का अर्थ

प्ले सेंटर एक ऐसा स्थान है जहां बच्चों को विभिन्न सुविधाएं जैसे खिलौने, खेल का स्थान आदि उपलब्ध होती हैं। जहां उन्हे वातावरण को समझने व अनुभव करने का अवसर प्राप्त होता है; जहां अनेक बच्चों को आपस में मिलने का अवसर मिलता है तथा इस प्रकार बच्चे का समग्र विकास होता है। यहां औपचारिक शिक्षण पर बल नहीं दिया जाता है बल्कि खेल के माध्यम से सीखने पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। यहां पर्यावरण मैत्रीपूर्ण तथा प्रेरणादायक होता है। प्ले सेंटर में 2-5 वर्ष की आयु के बच्चों को प्रतिदिन 2-3 घण्टों तक रखा जाता है।

इस प्रकार आप कह सकते हैं किः

खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर):

(क) बच्चों के लिए निर्मित इकाइयां है जो बच्चों को उनकी अपनी गति से विकसित होने में सहायता उपलब्ध कराते हैं।

(ख) बच्चे के साकल्यवादी विकास पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

(ग) खेल, खोज तथा अन्वेषण के माध्यम से स्वतंत्र व सामूहिक शिक्षण को आमंत्रित किया जाता है। इसलिए सीखना अति आनन्दमयी अनुभव हो जाता है।

(घ) स्कूल तथा स्कूल व्यवस्था के प्रति प्रोत्साहन को बनाए रखने में सहायक होता है।

खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) क्या नहीं हैः

(क) एक लघु प्राथमिक विद्यालय

(ख) एक स्थान जहां अध्यापक केन्द्रित शिक्षण को प्रोत्साहित किया जाता है।

(ग) एक स्थान जहां निष्क्रिय शिक्षण तथा कठोर आज्ञापालक की आवश्यकता होती है।

क्रिया

आपके समीप स्थित एक प्ले सेंटर को देखें तथा उनकी क्रियाओं का वर्णन कीजिए।

27.2 खेल-केन्द्र (प्ले सेंटर) आवश्यकता तथा आधार

अतः क्या अब आप बता सकते हैं कि बच्चों को खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) में जाने की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

2-5 वर्ष की आयु के बच्चों की सीखने की प्रक्रिया की कुछ विशिष्ट आवश्यकताएं होती हैं जो खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) की मांग को उत्पन्न करती हैं इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

(क) बच्चे प्राकतिक रूप से खेल के माध्यम से सीखते हैं।

(ख) बच्चे स्वयं करके ही सबसे अच्छे ढंग से सीखते हैं।

(ग) बच्चों की एकाग्रता की अवधि अधिक नहीं होती (7-15 मिनट)

(घ) 3 वर्ष के बच्चे का मस्तिष्क व्यस्क मस्तिष्क का 80 प्रतिशत होता है जो सर्वाधिक शिक्षण को सुलभ बनाता है, इसलिए उन्हें इस स्तर पर प्रेरणादायक वातावरण की आवश्यकता होती है।

(ङ) बच्चे एक दूसरे से, अन्य बच्चों से, वयस्कों से तथा वास्तविक वातावरण से आसानी से सीखते हैं।

पाठगत प्रश्न 27.1

बताएं सही या गलतः

1. प्ले सेंटर एक स्पोर्ट्स क्लब है। सही/गलत
2. प्ले सेंटर का कठोर ढांचा व कड़ा अनुशासन होता है। सही/गलत
3. बच्चे तभी सीखते हैं जब बड़े उन्हें सिखाते हैं। सही/गलत
4. प्ले सेंटर बच्चा केन्द्रित है, अध्यापक केन्द्रित नहीं। सही/गलत
5. प्ले सेंटर में बच्चों को अपनी स्वयं की गति से सीखने का अवसर मिलता है। सही/गलत

27.3 खेल-केन्द्र (प्ले सेंटर) के उद्देश्य

अब तक आप समझ गए होंगे कि खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) के उद्देश्य तथा आवश्यकताएं क्या हैं तथा वह कैसे कार्य करता है। एक कागज तथा पैन लीजिए और इस संबंध में जितना ज्यादा आप लिख सकते हैं लिखिए। अब अपनी इस सूची को हमारी निम्नलिखित सूची से तुलना कीजिए।

खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) के उद्देश्य निम्नलिखित हैंः

1. बच्चे को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, वस्तुओं तथा स्थानों का अन्वेषण, प्रयोग तथा अनुभव उपलब्ध करना।
2. समायु समूह तथा वयस्कों के साथ समद्ध तथा सकारात्मक अंतक्रिया के लिए अवसर उपलब्ध कराता है।

टिप्पणी

3. बच्चे के साकल्यवादी विकास के लिए एक सुरक्षित एवं सहायक शिक्षण को प्रोत्साहित करना
4. बच्चों में निष्क्रिय की अपेक्षा सक्रिय सीखने को प्रोत्साहित करना।
5. बच्चे के विकासात्मक स्तर के अनुसार अनुभवों के सजन को सम्भव बनाना।
6. शिक्षण को अधिक तनावपूर्ण बनाए बिना बच्चे को अपनी स्वयं की गति से सीखने व विकसित होने का अवसर देना एवं उसमें रुचि एवं प्रेरणा को बनाए रखने के अवसर प्रदान करना।
7. बच्चे में स्वःनियंत्रण व अनुशासन को प्रोत्साहित करना
8. घर से औपचारिक शिक्षा का मार्ग तय करने में सहयोग करना।

आप ''नई शिक्षा नीति'' दस्तावेज से भी अवगत होंगे। इस दस्तावेज में उल्लेखित प्रारंभिक बाल्यावस्था तथा शिक्षण के उद्देश्य निम्नानुसार हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा देखिए कि दो सूचियों में क्या समानताएं व अन्तर हैं।

27.4 खेल-केन्द्र (प्ले सेंटर) में बच्चों की देख रेख

हमारी उपर्युक्त चर्चा के अनुसार प्ले सेंटर के उद्देश्यों में से एक है बच्चों को पर्यावरण को समझने की स्वतंत्रता प्राप्त कराना। आप कह सकते हैं कि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बच्चों को स्वछंद रूप से आस पास विचरण की अनुमति दी जाए। यदि प्ले सेंटर में आपके पास 20 बच्चे हैं तथा सभी को स्वेच्छा से कुछ भी करने के लिए मुक्त कर दिया जाए, तो क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि वहां क्या होगा?

किसी परिवेश में सुरक्षित अनुभव करने के लिए बच्चों में किसी प्रकार के अनुशासन की आवश्यकता होती है। अतः बच्चे को स्वीकार्य तथा अस्वीकार्य व्यवहार की सीमाओं से अवगत कराया जाना चाहिए। देख रेखकर्ता को बच्चे पर निरन्तर निगरानी रखने की आवश्यकता होती है तथा उसके द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए बच्चा व्यवहार के दौरान स्वयं को या उसके आस पास किसी अन्य को चोट न पहुंचाए।

अनुशासन के मूलत् तीन प्रकार हैं जिन्हें बच्चों पर लागू किया जा सकता है। ये प्रकार निम्नानुसार हैः

अधिकारवादी, अनुज्ञात्मक तथा लोकतांत्रिक।

अब हम इनके संबंध में अधिक जानेंगेः

अधिकारवादी अनुशासनः जब इस प्रकार का अनुशासन लागू किया जाता है तो बच्चे को निर्देश दिया जाता है कि उसे क्या करना है तथा क्या नहीं करना और इस संबंध में कोई

टिप्पणी

स्पष्टिकरण नहीं दिया जाता है। इसके अतिरिक्त बच्चे को पूर्ण कर्मनिष्ठा दर्शानी होती है। क्या आपने घर में इस प्रकार का अनुशासन देखा है? इसे कौन लागू करता है? क्या आप समझते हैं कि प्ले सेंटर में देखरेखकर्ता इस प्रकार के अनुशासन को लागू कर सकता है? हां वह कर सकता/ती है। अधिकारवादी अनुशासन में बच्चे को वही कार्य करना होता है जो देखरेखकर्ता द्वारा कहा जाता है तथा जैसे हम पहले कह चुके हैं कि इसमें सम्पूर्ण कर्मनिष्ठा होती है तथा इसमें कोई अपेक्षा या प्रश्न नहीं होते हैं।

बच्चे इस प्रकार के वातावरण में खुश नहीं रहते हैं। क्या आप बता सकते हैं कि ऐसा क्यों? जी हां, आप सही हैं। उनके पास अपनी इच्छा से कुछ भी करने की स्वतंत्रता नहीं है। यदि बच्चों पर अत्यधिक निगरानी रखी जाएगी तो वे अपना काम चुपचाप तथा देखरेखकर्ता के पीछे करेंगे। वे झूठ बोलना भी सीखेंगे। यदि बच्चों को हर समय बताया जाएगा कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं तो वे दूसरों पर आश्रित होने लगेंगे। वे हमेशा दूसरों के निर्देशों का इंतजार करेंगे तथा कभी भी स्वालंबी नहीं हो पाएंगे।

अनुज्ञात्मक अनुशासनः इस प्रकार का अनुशासन अधिकारवादी अनुशासन के पूर्णतः विपरीत है। बच्चे को जो करना व जब करना अच्छा लगता है, उसे करने की अनुमति दे दी जाती है। यहां कोई नियम तथा कोई दिशानिर्देश नहीं है तथा बच्चे को स्पष्टिकरण भी दिया जाता है। क्या आप प्ले सेंटर में इस प्रकार के अनुशासन के परिणामों को बता सकते हैं? हां, बच्चों को किसी की बात न सुनने, किसी आदेशों को न सुनने की आदत पड़ जाएगी तथा वे वहां करेंगे जो उन्हें अच्छा लगता है, इस प्रकार का व्यवहार उन्हें स्वःकेन्द्रित तथा मतलबी बना देगा। इसके अतिरिक्त देखरेखकर्ता से काई दिशानिर्देश प्राप्त न होने के कारण बच्चे पथभ्रष्ट हो जाएंगे तथा उन्हें बुरी आदतें भी पड़ सकती हैं।

लोकतांत्रिक अनुशासनः इस प्रकार का अनुशासन उपर्युक्त वर्णित दो प्रकार के अनुशासनों के मध्य की स्थिति को दर्शाता है। क्या आप लोकतांत्रिक अनुशासन की कुछ विशेषताओं के संबंध में विचार कर सकते हैं? निम्नलिखित पर विचार कीजिएः

- नियमों को लागू करने से पूर्व उनका वर्णन किया जाता है।
- बच्चे नियमों पर प्रश्न उठा सकते हैं तथा संयुक्त सहमति से उनमें परिवर्तन किए जा सकते हैं।
- बच्चों की अपनी इच्छा से स्वयं करने दिया जाता है किन्तु उन्हें यह सुनिश्चित करना होता है कि वे स्वयं को या किसी अन्य को चोट न पहुंचाएं।

आपको क्या लगता है कि इस प्रकार के अनुशासन के क्या लाभ हो सकते हैं? जी हां, आप सही हैं, बच्चे बड़ों की बात मानेंगे तथा नियमों का आदर करना सीख जाएंगे, स्वयं में आत्मविश्वास विकसित करेंगे, किसी भी कार्य में पहल करना सीखेंगे तथा स्वतंत्र रूप से कार्य करेंगे। बच्चे अपनी बारी लेना, सहयोग करना तथा धैर्य रखना भी सीख जाएंगे।

आपको इस प्रकार का अनुशासन परिवार के अन्दर मिल जाएगा। ऐसे ही किसी परिवार का अवलोकन करें तथा देखें कि बच्चे किस प्रकार से अनुशासित हैं।

क्रिया

अपने किसी समीपवर्ती प्री–सकूल/ प्ले सेंटर का दौरा करें तथा अध्यापक से उनके उद्देश्यों का पता लगाएं। तत्पश्चात उन्हें इस पाठ में दिए गए उद्देश्यों के आधार पर मूल्यांकन करें।

पाठगत प्रश्न 27.2

1. बताएं सही या गलतः

   (i) एक प्ले सेंटर को कुशलतापूर्वक चलाने के लिए उद्देश्य पूर्वापेक्षाएं हैं। सही/गलत

   (ii) प्ले सेंटर में सभी बच्चों के केवल सामूहिक खेल ही खेलने होते हैं। सही/गलत

   (iii) सुरक्षित तथा सहायक वातावरण उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी क्रियात्मक कौशल विकसित करने के लिए सुविधाएं। सही/गलत

   (iv) प्ले सेंटर में बच्चों को पढ़ना, लिखना तथा अंकगणित सिखाया जाता है। सही/गलत

   (v) एक प्ले सेंटर में बच्चे के समग्र विकास पर ध्यान दिया जाता है। सही/गलत

2. सही उत्तर का चयन करें:

   (i) अधिकारवादी अनुशासनः

   (क) पूर्ण आज्ञापालन की मांग

   (ख) पूर्ण स्वतंत्रता की अनुमति

   (ग) कम आज्ञापालन की मांग तथा अधिक स्वतंत्रता देना

   (घ) अधिक आज्ञापालन की मांग तथा कम स्वतंत्रता देना

   (ii) अनुज्ञात्मक अनुशासनः

   (क) पूर्ण आज्ञापालन की मांग

   (ख) पूर्ण स्वतंत्रता की अनुमति

   (ग) कम आज्ञापालन की मांग तथा अधिक स्वतंत्रता देना

   (घ) अधिक आज्ञापालन की मांग तथा कम स्वतंत्रता देना

   (iii) लोकतांत्रिक अनुशासनः

   (क) पूर्ण आज्ञापालन की मांग

टिप्पणी

(ख) पूर्ण स्वतंत्रता की अनुमति

(ग) कम आज्ञापालन तथा अधिक स्वतंत्रता देना

(घ) अधिक आज्ञापालन तथा कम स्वतंत्रता देना

(iv) अच्छे प्ले सेंटर को ऐसे अनुशासन का अनुसरण करना चाहिए जो होः

(क) अधिकारवादी

(ख) अनुज्ञात्मक

(ग) लोकतांत्रिक

(घ) सभी प्रकारों का मिश्रण

(v) बच्चें की झूठ बोलने की आदत पड़ जाएगी यदि अनुशासन होः

(क) अधिकारवादी

(ख) अनुज्ञात्मक

(ग) लोकतांत्रिक

(घ) इनमें से काई नहीं

(vi) बच्चे 'पहल' करना सीखेंगे यदि अनुशासन का अनुसरण किया जाए

(क) अधिकारवादी

(ख) अनुज्ञात्मक

(ग) लोकतांत्रिक

(घ) इनमें से काई नहीं

(vii) बच्चे स्वयं में आत्मविश्वास विकसित करते हैं यदि उनका लालन पालन ..... अनुशासन में किया जाए।

(क) अधिकारवादी

(ख) अनुज्ञात्मक

(ग) लोकतांत्रिक

(घ) इनमें से काई नहीं

27.5 प्ले सेंटर में बच्चों में व्यवहारात्मक समस्याएं

प्रायः छोटे बच्चे अनुचित व्यवहारों को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए बच्चा सभी को मारने की आदत विकसित कर ले, वस्तुओं को तोड़ने, गलत भाषा के प्रयोग, झूठ बोलने आदि

टिप्पणी

की आदत बना लेते हैं। इस प्रकार के व्यवहार बच्चों के लिए न केवल शारीरिक रूप से हानिकारक होते हैं बल्कि ये बच्चों को अन्य बच्चों में अप्रिय भी बना देते हैं।

कारणः बच्चे द्वारा इस प्रकार के व्यवहार को विकसित करने के कई कारण हो सकते हैं। इनमें से कुछ निम्नानुसार हैंः

- जब बच्चे ऐसे परिवेश में रहते हैं जहां उन्हें स्वःअभिव्यक्ति से वंचित रखा जाता है तो वे ऐसे व्यवहार करने लगते हैं जो स्वीकार्य नहीं होते।
- जब मातापिता व अध्यापक बच्चों से अत्यधिक उम्मीदें लगा लेते हैं तथा बच्चे उन्हें पूरा नहीं कर पाते हैं तो वे अस्वीकार्य व्यवहार करने लगते हैं।
- प्रायः बच्चे यह सीख जाते हैं कि अपनी बात को मनवाने के लिऐ अस्वीकार्य व्यवहार औजार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए बच्चा समझ जाता है कि जब वह अपने छोटे भाई या बहन को मारेगा तो उसके माता पिता उस पर ध्यान देंगे या जब वह रोएगा या फर्श पर लोटेगा तभी उसे खिलौने मिलेंगे।
- जब परिवार का वातावरण अशांत हो, उदाहरण के लिए जब माता पिता आपस में लड़ते हों, वे एक दूसरे को मारते हों या जब उनकी मां उनकी दादी के साथ नहीं रहती हो, तब बच्चे अस्वीकार्य व्यवहार को ग्रहण करने लगते हैं।
- जब बच्चे के जीवन में कोई संकट उत्पन्न हो जाए। उदाहरण के लिए बच्चा अपने छोटे भाई या बहन के जन्म पर अथवा परिवार के किसी प्रिय सदस्य की मत्यु पर असामान्य व्यवहार करने लगता है।
- बच्चे उस समय भी अस्वीकार्य व्यवहार करने लगते हैं जब से शारीरिक कारणों से परिस्थितियों से निपट नहीं पाते हैं। ऐसा तब होता है जब उन्हें कोई लम्बी बीमारी हो या वे बारम्बार बीमार पढ़ते हों।

प्ले सेंटर पर देखरेखकर्ता को सतर्क तथा व्यवहारकुशल होना चाहिए। जब कभी कोई बच्चा अस्वीकार्य व्यवहार करता है तो देखरेखकर्ता को तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। चूंकि अधिकतर व्यवहारात्मक समस्या घर से उत्पन्न होती है। इसलिए उन्हें बच्चों के माता पिता से सहयोग लेना चाहिए, समस्या को समझना चाहिए तथा ऐसी नीति विकसित करनी चाहिए जो उक्त समस्या के समाधान में सहायक हो सके। सजा देने तथा डांटने या भला–बुरा कहने से कोई मदद नहीं मिलेगी। कुछ सामान्य व्यवहारात्मक समस्याओं का उल्लेख तालिका २७.१ में किया गया है तथा इस तालिका में इस बात का भी उल्लेख है कि सामान्यतः वयस्कों को क्या करना चाहिए तथा क्या नहीं।

टिप्पणी

तालिका 27.1: *छोटे बच्चों में पाई गई कुछ सामान्य व्यवहारात्मक समस्याएं*

व्यवहार	अर्थ	नहीं करना चाहिए	करना चाहिए
(क) **अन्य बच्चों को चोट पहुंचाना**	– क्रोध की भावना	– दण्ड देना या चोट पहुंचाना – उसे अहसास कराना	– उसका ध्यान विकेन्द्रित करें – अन्य बच्चों से अलग करें – भावनाओं के अन्य माध्यमों की सहायता से बच्चे को प्यार का अहसास दिलाना
(ख) **वस्तुओं को तोड़ना**	–असहायता की भावना – जलन – बोर होना – ध्यान आकष्ट करना	– डांटना, चिल्लाना, दण्ड देना, थप्पड़ मारना या चोट पहुंचाना	– बहुमूल्य वस्तुओं को बच्चों की पहुंच से दूर रखें – खेलने के लिए स्थान उपलब्ध कराएं – निम्न लागत के विकल्प उपलब्ध कराएं – बच्चे को अन्य गतिविधियों में विकेन्द्रित करें
(ग) **अंगूठा चूसना**	– चूसने की आदत, आराम तथा आश्वासन – थकावट – भूख – असंतोष – ऊबना	– उंगलियों को बांधना या उन पर कड़ी दवा लगाना	– चूसने का संतोष उपलब्ध कराएं – प्यार व स्नेह दें – आनन्दमयी गतिविधियेां में लगायें – बच्चे की आवश्यकता की वस्तुएं उपलब्ध कराएं
(घ) **बिस्तर गीला करना**	– बच्चा प्रशिक्षण के लिए तैयार नहीं है – भय – असुरक्षा की भावना	– डांटना या दण्ड देना – उसे पहले बताने को कहना – यह कहना कि आप बच्चे को प्यार नहीं करते	– बच्चा जैसा है उसे वैसे ही स्वीकार करना – अचानक बिस्तर गीला करने की प्रवति को स्वीकार करना – बच्चे में आत्मविश्वास को विकसित करने में सहायता देना व प्रोत्साहित करना
(ङ) **झूठ बोलना**	– दण्ड का भय – अतिरंजना – कल्पना – ध्यान आकर्षित करना	– उपदेश देना या दण्डित करना या धुतकारना – माफी मांगने को कहना – नाराज हो जाना	– कारणों को समझें – अपेक्षित ध्यान दें – कल्पनाओं को समद्ध बनाने का अवसर प्रदान करें।
(च) **भोजन करने से इंकार करना**	– भूख नहीं है – ठीक महसूस न करना – भोजन विशेष अच्छा न लगना	– जबरदस्ती करना, दण्ड देना – बात को बढ़ाना – इनाम, धमकी देना – कहना मानने के लिए जबरदस्ती करना	– शांत बने रहें – बच्चे की मनपसंद भोजन सहित नए प्रकार के व्यंजन बनाएं
(छ) **भय**	– दर्द भरे अनुभवों को याद करना – माता पिता का ध्यान आकर्षित करने के लिए – दोषी या अप्रिय अनुभव करना	– भय के कारण का पता लगाने के लिए जोर देना, शर्मिंदा करना या धमकाना	– उसे पुनः आश्वस्त करें व आरामदाय स्थिति में रखें – परिवेश को खुशनुमा बनाए – प्रयासों की सराहना करें – भयपूर्ण अनुभवों से बचें तथा स्वयं की मदद करने में उसकी सहायता लें
(ज) **चोरी**	– सम्पति अधिकारों से अनजान होना – असंतुष्ट आवश्यकताएं – चिड़चिड़ाहट – विरोधी भावना	– डांटना, बुरा महसूस कराना, दण्ड देना या निंदित करना – प्यार में कमी करना – दूसरों के सामने बेइज्जत करना	– बच्चे को वस्तुएं दे दीजिए तथा उनके स्वामित्व की भावना डालें। – दयालु बनें, बच्चे को समझें तथा अत्यधिक कठोर न बनें – सजनात्मक स्रोत उपलब्ध कराएं – अच्छे दोस्त बनाने में सहयोग करें

गतिविधि

अपने पड़ोस के दो बच्चों का अवलोकन करें तथा उनमें किसी प्रकार की व्यवहारात्मक समस्या का पता लगाएं। मूल्यांकन करें कि उनके व्यवहार ऊपर दर्शाए विवरणों के कितने समीप हैं। यह भी पता लगाएं कि बच्चों के मातापिता उनके व्यवहारों से कैसे निपटते हैं।

पाठगत प्रश्न २७.३

1. रिक्त स्थान भरें:

   (i) ..... अनुशासन में बच्चे को किसी प्रकार का मार्गदर्शन नहीं।

   (ii) ..... अनुशासन बच्चे के लिए सर्वाधिक लाभकारी है क्योंकि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता उपलब्ध कराता है।

   (iii) ..... अनुशासन में माता पिता कारण के स्थान पर प्राधिकार के नियम चलाते हैं।

   (iv) जिन बच्चों में चोरी करने की आदत हो उन्हें ..... या ..... नहीं किया जाना चाहिए।

   (v) अशांत पारिवारिक वातावरण के कारण ..... उत्पन्न हो सकती हैं।

2. सही विकल्प का चयन करें:

   (i) बच्चे अस्वीकार्य व्यवहार विकसित कर लेते हैं यदि वातावरण:

   (क) घणित

   (ख) मुक्त

   (ग) घणित व मुक्त हो

   (घ) इनमें से कोई नहीं

   (ii) बच्चे को किस प्रकार के अनुशासन में दण्डित या मजाक उड़ाया जाता है:

   (क) अधिकारवादी अनुशासन

   (ख) लोकतांत्रिक अनुशासन

   (ग) अनुज्ञात्मक अनुशासन

   (घ) उपर्युक्त सभी अनुशासनों में

   (iii) एक बच्चा अपना अंगूठा चूसता है क्योंकि वह

   (क) ऊबता है

टिप्पणी

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) ध्यान केन्द्रित करना चाहता है

(iv) बच्चा बिस्तर गीला करता है क्योंकि वहः

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) ध्यान केन्द्रित करना चाहता है

(v) बच्चा झूठ बोलता है क्योंकि वहः

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) ध्यान केन्द्रित करना चाहता है

(vi) बच्चा वस्तुओं को तोड़ता है क्योंकि वहः

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) ध्यान केन्द्रित करना चाहता है

(vii) बच्चा चोरी करता है जब वह

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) विरोधी प्रवति का होता है

(vii) बच्चा बार–बार खाना खाने से इनकार करता है क्योंकि वह

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित होता है

(ग) विरोधी होता है

(घ) अस्वस्थ होता है

आपने क्या सीखा

प्ले सेंटर क्या है (अर्थ तथा विशेषताएं)

आवश्यकता व आधार	उद्देश्य	बच्चे की देखरेख	बच्चे में व्यवहारात्मक समस्याएं
– बच्चा खेल के माध्यम से सीखते है। – ध्यान केन्द्रित करने की अल्प अवधि – मस्तिष्क का विकास – एक दूसरे से सीखना – प्रोत्साहन बनाए रखना – निरन्तर मूल्यांकन	– सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करना – सीखने के लिए अवसर – अच्छी आदतें सीखना – सौन्दर्यविषयक विकास – सामाजिक– भावात्मक परिपक्वता – बौद्धिक उद्दीपन – सुरक्षित वातावरण – अभिव्यक्ति में सुधार – स्वतंत्रता को प्रोत्साहन	– अधिकारवादी – अनुज्ञात्मक – लोकतांत्रिक	– कारण – प्रकार – देखरेख के तरीके

पाठान्त प्रश्न

1. एक प्ले सेंटर के उद्देश्य उसकी विशेषताओं तथा कार्यक्रम को कैसे परिभाषित करते हैं।
2. एक पैराग्राफ लिखिए कि आप एक प्ले सेंटर में लोकतांत्रिक अनुशासन तकनीक का प्रयोग कैसे करेंगे?
3. बच्चों में व्यवहारात्मक समस्याओं के क्या कारण हैं?
4. आपके अनुसार माता पिता के समक्ष सर्वाधिक जटिल व्यवहारात्मक समस्या कौन सी है? कारण बताइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1 (1) गलत (2) गलत (3) गलत (4) सही (5) सही

27.2 1.(i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) गलत (v) सही

टिप्पणी

2. (i) क (ii) ख (iii) ग (iv) ग (v) क
(vi) ग (vii) ख

27.3 1. (i) अनुज्ञात्मक (ii) लोकतांत्रिक (iii) अधिकारवादी
(iv) दण्ड देना, निन्दित करना (v) व्यवहारात्मक समस्याएं

2. (i) क (ii) क (iii) क (iv) ख (v) घ
(vi) ग (vii) घ (viii) घ

28

खेल केन्द्रः संरचनात्मक विवरण

खेल केन्द्र (प्ले सेंटर) एक ऐसा स्थान है जहां 2-5 वर्ष की आयु के बच्चे आते हैं, खेलते हैं, वातावरण को समझते हैं तथा आपस में अंतक्रिया करते हैं। बच्चों के इन उद्देश्यों को सुरक्षित ढंग से पूरा करने तथा बच्चों को उनके इष्टतम स्तर तक विकसित करने के उद्देश्य से इमें एक प्ले सेंटर को स्थापित करने के विवरण पर ध्यान केंन्द्रित किये जाने की आवश्यकता है। यदि आपने पहले किसी प्ले सेंटर का दौरा किया है तो आपने अवश्य देखा होगा कि उसमें विभिन्न गतिविधियों के लिए पर्याप्त स्थान होता है तथा न केवल बच्चे बल्कि अन्य भी बच्चों तथा अन्य वस्तुओं के साथ आनन्दित अनुभव करते हैं। आप आनन्दित अनुभव क्यों करते हैं क्या उपलब्ध स्थान ही एक मात्र कारण है? अन्य कौन से कारक हैं जो प्ले सेंटर को अच्छा बनाते हैं?

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आपके लिए सम्भव होगाः

- एक प्ले सेंटर में वास्तविक संरचना तथा सुविधाओं का ज्ञान प्राप्त करना;
- अपेक्षित उपकरण व सामग्री के संबंध में सूचना प्राप्त करना; तथा
- प्ले सेंटर के स्टाफ की कुछ पूर्वापेक्षाओं का उल्लेख करना।

28.1 स्थल तथा स्थान संबंधी आवश्यकताएं

खेल कूद तथा अन्य गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रम उपलब्ध कराने वाले एक प्ले सेंटर में निसंदेह पर्याप्त स्थान की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त अन्य आवश्यकताएं

हैं– स्थल, सुरक्षा, स्वच्छ तथा हवादार बनाना। प्ले सेंटर को ऐसे स्थल पर स्थापित होना चाहिए जहां

(क) बच्चों के लिए पहुंचना आसान हो, और

(ख) हानिकारक/खतरनाक स्थानों यथा भारी यातायात, तालाब, गड्डों, प्रदूषण आदि से सुरक्षित होना चाहिए।

अगला महत्वपूर्ण कदम है प्ले स्कूल के भीतरी स्थान तथ विभिन्न गतिविधियों के आयोजन हेतु उसका संगठनः

(क) खेल का क्षेत्रः यह आउटडोर भी हो सकता है और इंडोर भी।

(i) खेल का क्षेत्र- आउटडोर

क्या आप जानते हैं कि बच्चों को बाहर खेलने के लिए कितनी जगह की आवश्यकता होती है? यह क्षेत्र प्रति बच्चा कम से कम 3 से 5 वर्गमीटर का होना चाहिए। यदि उस क्षेत्र की सतह ठोस हो तो बेहतर होगा क्योंकि वहां बच्चों के खिलौने रखे जा सकेंगे तथा बॉलों को उछाला जा सकेगा। यदि इसके अतिरिक्त और अधिक स्थान उपलब्ध है तो घास के मैदान का भी प्रावधान किया जाना चाहिए जहां बच्चे खेल से, बागवानी करें, वहां सैंड बाक्स तथा पालतू जानवर भी रखे जा सकें।

कुछ सावधानियां

प्ले स्कूल में:

- नियमित आऊटलाइन होनी चाहिए ताकि आसानी से निगरानी रखी जा सके।
- सुरक्षा के लिए उचित ढंग से चारों ओर तारे लगी होनी चाहिए।
- यह स्थान कीलों, पत्थरों, वस्तुओं के टुकड़ों या कांच के टुकड़ों से मुक्त होना चाहिए।
- प्ले सेंटर बड़े गड्डों, पानी के टैंकों आदि से दूर होने चाहिए तथा
- इसका मार्ग साफ व सुगम होना चाहिए।

(ii) खेल का क्षेत्र- इंडोर

- प्रति बच्चा न्यूनतम 2 वर्ग मीटर स्थान
- यह क्षेत्र अनुकूल, परिवर्तनीय तथा सदश्य होना चाहिए
- यह पर्यवेक्षण के लिए सुलभ होना चाहिए
- उचित ढंग से संवातित होना चाहिए तथा पर्याप्त प्रकाश होना चाहिए

- दीवारें साफ होनी चाहिए तथा उसमें अच्छे ढंग से प्लास्टर लगा होना चाएिह।
- दीवारों में बच्चों द्वारा किए गए कार्यों को प्रदर्शित करने तथा अन्य चित्रात्मक सामग्रियों को लगाने के लिए पर्याप्त स्थान होना चाहिए।
- 6-8 बच्चों द्वारा कला संबंधी कार्य आदि करने के लिए मैट तथा नीची व हल्की टेबलों (लगभग 30 सेंटीमीटर ऊंची) की व्यवस्था होनी चाहिए।
- लेखन आदि के लिए निम्न स्तर का ब्लैक बोर्ड का प्रावधान
- बच्चों का सामान, खिलौने, आदि को रखने के लिए निचले रैक
- स्वः अभिव्यक्ति यथा नत्य, नाटिका, संगीत आदि के लिए स्थान

(ख) पर्यावरण के समीप जाने के लिए क्षेत्र

इसमें फूलों, सब्जियों तथा फलों के लिए बागीचा, खरगोश, पक्षियों के पिंजरे, पक्षियों के घोंसले के लिए छोटा स्थान तथ इंडोर साइंस कार्नर बच्चों को प्रकति को समझने व अनुभव करने का अवसर उपलब्ध कराता है।

(ग) पेय जल की व्यवस्था

प्ले सेंटर में निम्नलिखित व्यवस्थाएं होनी चाहिएः

- स्वच्छ एवं शुद्ध पेय जल
- बर्तनों को धोने की व्यवस्था

(घ) सैनिटेशन सुविधाएं

एक प्ले सेंटर में निम्नलिखित सैनिटेशन सुविधाएं होनी चाहिएः

- एक साफ इंडियन टाइप टायलट तथा पर्याप्त पानी की सुविधा होनी चाहिए।
- साबुन व तौलिए का प्रावधान
- डस्टबीन का प्रावधान

(ङ) सोने की सुविधा

यदि प्ले सेंटर पूर्णदिवसीय है या 3 घंटों से अधिक के लिए क्रियाशील होता है तो उसमें सोने की सुविधा का होना आवश्यक है। निश्चित रूप से बच्चे कुछ देर के लिए सोएंगे। इस उद्देश्य के लिए स्थान के अतिरिक्त, साफ मैट या मैट्रेसिस, चादरें तथा तकियों की भी आवश्यकता होती है।

टिप्पणी

(च) भण्डारण सुविधा

बच्चों के खेलने की वस्तुएं तथा बच्चों को खाने पीने की चीजें उपलब्ध कराने में प्रयोग होने वाले किचन के बर्तनों को रखने के लिए भण्डार स्थान की आवश्यकता होती है।

(छ) किचन का क्षेत्र

आसानी से साफ किए जाने वाले एक सुसंवातित, बड़ा किचन क्षेत्र होना चाहिए। इसमें पकाने, बर्तनों को धोने तथा बर्तनों को रखने आदि के लिए पर्याप्त स्थान होना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 28.1

1. एक प्ले सेंटर में खेल के क्षेत्र को

   (क) इनडोर

   (ख) आऊटडोर

   (ग) इनडोर व आउटडोर दोनों

   (घ) बाहर से अधिक भीतर, होना चाहिए

2. प्ले सेंटर में बच्चों के खेल की निगरानी सम्भव है यदि वह

   (क) इंडोर है

   (ख) आउटडोर है

   (ग) इंडोर तथा आउटडोर दोनों है

   (घ) इंडोर अधिक व आउटडोर कम है

3. आउटडोर खेल के क्षेत्र को कम से कम कितना होना चाहिएः

   (क) 1-2 वर्ग मीटर/प्रति बच्चा

   (ख) 2 वर्ग मीटर/प्रति बच्चा

   (ग) 3 वर्ग मीटर/प्रति बच्चा

   (घ) 3-5 वर्ग मीटर/प्रति बच्चा

4. इंडोर खेल का क्षेत्र प्रति बच्चा कम से कम कितना होना चाहिएः

   (क) 1-2 वर्ग मीटर

   (ख) 2. वर्ग मीटर

(ग) 3 वर्ग मीटर

(घ) 3-5 वर्ग मीटर

5. किसी भी प्ले सेंटर में प्राथमिकता होनी चाहिएः

(क) आउटडोर खेल का क्षेत्र

(ख) खेल सामग्री

(ग) सुरक्षित पेय जल

(घ) किचन

6. पर्यावरण से परिचय के उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक प्ले सेंटर में अवश्य होना चाहिएः

(क) आउटडोर स्थान

(ख) खेल सामग्री

(ग) सुरक्षित पेय जल

(घ) साफ शौचालय

28.2 प्ले सेंटर में उपकरण

बच्चों को रोचक तथा चुनौतीपूर्ण अनुभव उपलब्ध कराने के लिए प्ले सेटर में विभिन्न प्रकार के खेल उपकरणों की आवश्यकता होती है। किसी प्रकार के उपकरण को खरीदते या प्रयोग करते समय बच्चे के विकासात्मक स्तर, वस्तु की गुणवत्ता, सुरक्षा, जटिलता आदि जैसे कुछ मूलभूत बिन्दुओं को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। कुछ और विशेषताओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

खेल के अच्छे उपकरण की विशेषताएं

(क) शैक्षिक विशेषताएं

- लड़के व लड़कियों के खिलौनों में कोई भेदभाव न हो
- मजबूत व लम्बे समय तक चलने वाले हों
- इच्छानुसार नये विकल्पों का प्रावधान होना चाहिए।
- बच्चे की कल्पना भी शामिल होनी चाहिए
- बच्चों में सहयोग को प्रोत्साहित करें

टिप्पणी

(ख) डिजाइन की विशेषताएं

- बहु उपयोगी
- सुरक्षित
- बच्चे के लिए सुरक्षित
- विभिन्न सामग्रियों (लकड़ी, रबर, धातु, रस्सी, रेत आदि) से निर्मित
- अनुपातिक तथा मात्रात्मक
- लचीले

(ग) संरचनात्मक विशेषताएं

- छीलन रहित लकड़ी, सख्त हार्डवेयर
- विश्वसनीय (सदैव कार्य करे)
- लागत कुशल तथा किफायती
- मरम्मत योग्य

28.3 आउटडोर तथा इंडोर खेल उपकरण

एक प्ले सेंटर में उपलब्ध कराए जाने वाले खेल के उपकरणों की सूची निम्नानुसार है। बहरहाल, खेल उपकरण के प्रकार तथा उनकी संख्या प्ले सेंटर में बच्चों की संख्या व आयु, आउटडोर व इंडोर खेल के स्थान तथा खेल के उपकरणो को खरीदने व अनुरक्षण के लिए उपलब्ध निधियों पर निर्भर करती है। यदि निधियां उपलब्ध हों, एक प्ले सेंटर में 35-40 बच्चों के समूह को उपलब्ध कराए जाने वाले उपकरणों की सूची निम्नानुसार है।

आउटडोर खेल उपकरण

मदों के नाम	*मात्रा*
1. झूले	2
2. ट्राईसाइकल	2
3. जंगल जिम व स्लाइड	1
4. रबड़ की बॉलें (छोटी व बड़ी)	प्रत्येक 2
5. रॉकिंग खिलौने	2
6. संतुलन के लिए लकड़ी का फट्टा	1

7. पुश कार्ट	2
8. छोटी सीढ़ी	1
9. पेड़ की टहनी या किसी ढांचे पर लटका टायर (टायर झूला)	2
10. रेत के भरने के लिए छोटी बाल्टियां, मग केन, डिब्बे आदि	एक सेट
11. इसेल बोर्ड	1
12. प्लास्टिक टब	2

इनडोर खेल के उपकरण

मदों के नाम	*मात्रा*
1. झूले	2
2. बिल्डिंग ब्लॉक (विविध आकार व प्रकार) त्रिकोण, चौकोर, सिलिंडर, अर्धगोलाकार तथा चौथाईगोलाकार, आर्क, वर्गाकार, खम्भ, रैम्प, ब्रिक–छोटे व बड़े	प्रत्येक 6
3. संरचनात्मक सामग्री	
क) खिलौनों को जोड़ना	
ख) हाउस बिल्डिंग सेट	
ग) पिक्चर पज़ल	प्रत्येक 3
4. गुड़िया उपकरण	
क) गुड़िया	3
ख) गुड़िया की पलंग, कुर्सी, टेबल (लघु रूप)	3
ग) पकाने, धोने, चाय सेट, बैग, जूते, टोपी, रेडियो आदि जैसे घर के सामान	एक सेट
5. विज्ञान संबंधी उपकरण	
क) मैगनिफाइंग ग्लास (लैंस)	2
ख) चुम्बक	2
ग) भार सहित संतुलन	1
घ) मापन पात्र	एक सेट
ङ) सिफोन ट्यूब	2

टिप्पणी

च) छोटे झाड़ू, बाल्टियां, स्पोंज	प्रत्येक 2
6. संगीत उपकरण	
क) ड्रम	प्रत्येक 2
ख) जिंगल बैल	
ग) ढोलक व तबला	
घ) झुनझुना	
ङ) ज़ाइलोफोन	
च) रिदम स्टिक	
छ) धंटियां	
7. कारपैंटर के औजार	
क) हथौड़ी व कीलें	एक सेट
ख) हलकी लकड़ी के टुकड़े	
ग) लकड़ी के फट्टे	
घ) आरी व शिकंजा	
ङ) कैंचिया	
च) ब्रुश	
8. मणिका	
क) लकड़ी के दाने (लाल, नीले, पीले)	200
ख) प्लास्टिक के दाने (विभिन्न रंग)	200
ग) प्लास्टिक का बाउल (पात्र)	4
9. फोर्म बोर्ड	3
10. पिग बोर्ड व हथौड़ी	2
11. खोखले पिरामिड (प्लास्टिक/लकड़ी)	दो सेट
12. परिवहन खिलौने (कार, बसें ट्रेन आदि)	प्रत्येक 2
13. कटपुतलियां	6
14. खरगोश/पक्षियों का पिंजरा	1
15. प्रथम उपचार बाक्स	1
16. माप मशीन	1
17. कूड़े के डिब्बे	3
18. प्रदर्शन बोर्ड	3

19. एप्रन	10
20. चित्रात्मक पुस्तकें व कहानी की पुस्तकें	24
21. जानवरों वाले खिलौने	6
22. परिधान, टोपियां तथा सहायक वस्तुएं	एक सेट

23. कहानी सुनाने संबंधी सहायक वस्तुएं यथा चित्रात्मक पुस्तकें, कटपुतलियां, स्टोरी कार्ड आदि
24. ब्लैकबोर्ड, चाक या स्लेट
25. क्रायन (रंग), पेपर, पैंसिल, पेंट
26. क्ले तथा प्लास्टरसाइन
27. कैंची
28. गोंद/फेवीकोल आदि

जहां तक सम्भव हो ऐसी सामग्री की व्यवस्था करें जिन्हें बच्चे प्रत्यक्ष रूप से प्रयोग कर सकें। इसके अतिरिक्त, किसी भी प्रकार की खतरनाक सामग्री को तत्काल बदलें। अपने परिवेश में प्रयोग होने वाली वस्तुओं का उपयोग करके निम्न लागत उपकरणों का निर्माण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए खाली डिब्बे, कपड़ों के टुकड़े, समाचारपत्र, थरमाकोल आदि।

प्रथम उपचार किट

इस किट में अनिवार्य रूप से निम्नलिखित वस्तुएं होनी चाहिएः

- बैंडेज
- स्टिकिंग प्लास्टर
- परिष्क्रित रुई
- पट्टी
- थरमामीटर
- कैंची
- एंटीसैप्टिक क्रीम
- नीली दवाई

पाठगत प्रश्न 28.2

1. बताएं सही या गलत

(i) खेल उपकरण के बिना भी एक प्ले सेंटर कुशलतापूर्वक कार्य कर सकता है। सही/गलत

(ii) खेल के उपकरण केवल दुकानों से ही लाए जाने चाहिए। सही/गलत

(iii) खेल उपकरणों के प्रभावी प्रयोग के लिए उनकी उचित व्यवस्था भी महत्वपूर्ण है। सही/गलत

(iv) एक बार लाने के पश्चात उपकरणों को बदलने की आवश्यकता नहीं होती है। सही/गलत

(v) खेल के उपकरणों को लचीला नहीं होना चाहिए। सही/गलत

28.5 प्ले सैंटर के कार्मिक

(क) अध्यापक

प्ले सेंटर में उपलब्ध कराई जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता पर अध्यापक का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। अध्यापक ही एक ऐसी कार्मिक होती है जो स्थापित लक्ष्यों व उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्ले सेंटर में आयोजित गतिविधियों तथा कार्यक्रमों के लिए उत्तरदायी होती है।

इस क्षेत्र में अनिवार्य प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण योग्यता है। प्ले सेंटर प्रबंधन या प्री–स्कूल संगठन के लिए अध्यापक को व्यावसायिक पाठयक्रम या डिप्लोमा पाठ्यक्रम करना चाहिए। एक प्ले सेंटर के अध्यापक के लिए कुछ अन्य योग्यताएं भी आवश्यक हैं। ये योग्यताएं हैंः–

- प्ले सेंटर के सुसंगठन हेतु विशिष्ट लक्ष्यों व उद्देश्यों को समझना
- इस तथ्य का व्यापक ज्ञान होना कि प्ले सेंटर की गतिविधियां कहां और कैसे संगठित की जाएं।
- दसवीं + 2 वर्ष का प्रशिक्षण या 12 कक्षा पास, 1 वर्ष का प्रशिक्षण
- कम से कम 18 वर्ष की आयु, तथा
- प्ले सेंटर के लिए अपेक्षित आवश्यक सामग्री तथा उनके अर्थपूर्ण प्रयोग के से अवगत होना।

(ख) सहायक

किसी भी प्ले सेंटर में हाउस कीपिंग सेवाओं की आवश्यकता होती है जैसे वस्त्रों को धोना, खेल के मैदान तथा फर्श की सफाई बुलिटिन में चित्रों को बदलना तथा इसेल बोर्ड में पेपरों को बदलना, उपकरणों को निकालना व इसका तथा अन्य वस्तुओं की देखरेख करना और इन सभी कार्यों के लिए प्ले सेंटर में एक सहायक की आवश्यकता होती है। उसे बच्चों से लगाव हो तथा वह हर समय बच्चों की देखरेख के लिए तत्पर रहे। चूंकि बच्चे अधिकतर समय फर्श पर ही रहते हैं इसलिए फर्श को व्यापक रूप से साफ किया

जाना चाहिए। शौचालय तथा वाथरूम में सहायक की आवश्यकता होती है जिससे बच्चों व अध्यापक को विभिन्न परिस्थितियों में मदद मिलती है। उसे कम से कम ८वीं पास होना चाहिए।

(ग) बावर्ची

यदि प्ले सेंटर में भोजन कार्यक्रम को भी शामिल किया जाता है तो अध्यापक व्यंजनों की सूची बनाता है, भोजन के तैयार होने तथा परोसे जाने का निरीक्षण करेगा। भोजन बनाने के लिए कर्मचारियों की सूची में एक रसोइए की भी आवश्यकता है। वह समय पर पौष्टिक तथा स्वादिष्ट भोजन तैयार करने के लिए अध्यापक से निर्देश लेने के लिए तैयार रहे। रसोइये को पढ़ना व लिखना आना चाहिए।

नोटः हालांकि एक प्ले सेंटर में कर्मचारियों की संख्या, उनके कार्यक्रम, वित्त, भवन, उपकरण के प्रावधान, बच्चों की संख्या, बच्चों की आयु, अध्यापक के प्रशिक्षण आदि कारकों से प्रभावित होती है किन्तु प्रत्येक 10-15 बच्चों पर एक वयस्क की व्यवस्था होनी चाहिए।

प्ले सेंटर में एक अध्यापक का उत्तरदायित्व

एक प्ले सेंटर में अध्यापक के स्वयं, बच्चों, स्कूल तथा समाज के प्रति विभिन्न उत्तरदायित्व होते हैं। यद्यपि इन उत्तरदायित्वों को एक अच्छे अध्यापक की विशेषताओं के रूप में देखा जा सकता है, जो एक धुरी के रूप में होता है और प्ले सेंटर की सम्पूर्ण कार्यप्रणाली उसके चारों ओर घूमती है तथा उस पर निर्भर करती है। एक अध्यापक के उत्तरदायित्व निम्नानुसार हैंः

1. स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व

प्ले सेंटर के अध्यापक के स्वयं के प्रति उत्तरदायित्वः

क) हर समय अच्छा शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखना

ख) प्रगतिशील बने रहना

ग) सदैव उत्साहजनक बने रहना, तथा

घ) व्यावसायिक बनना

2. बच्चों के प्रति उत्तरदायित्व

प्ले सेंटर के अध्यापक द्वारा सामूहिक रूप से बच्चों के प्रति निम्नलिखित जिम्मेदारियों को पूरा किए जाने की आवश्यकता होती हैः

टिप्पणी

क) उनकी आवश्यकताओं को पूरा करे

ख) काम करने व उनके साथ रहने में आनन्द का अनुभव करे

ग) व्यक्तिगत रूप से उनका आदर करे

घ) उनके साथ वांछित संबंधों की स्थापना करे तथा

ङ) एक अच्छी स्वः छवि के निर्माण में सहायता दे

3. अभिभावकों के प्रति उत्तरदायित्व

माता पिता के प्रति अध्यापक के उत्तरदायित्व हैं:

क) अच्छा परामर्श उपलब्ध कराना

ख) उन्हें तथा उनके विचारों को महत्व दें

ग) बच्चे की भलाई के लिए उनके साथ मिलकर योजना बनाएं

घ) विद्यालय तथा घर के मध्य के अन्तर को कम करे

4. अन्य स्टाफ सदस्यों के प्रति उत्तरदायित्व

अन्य स्टाफ सदस्यों के प्रति अध्यापक के उत्तरदायित्वः

क) उनके विचारों व ज्ञान का समर्थन करे

ख) उन्हें व उनके विचारों को महत्व दीजिए, तथा

ग) कार्यक्रमों में उन्हें शामिल करें

5. समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व

प्ले सेंटर में अध्यापक द्वारा समाज के प्रति निम्नलिखित उत्तरदायित्वों को पूरा किए जाने की आवश्यकता है:

क) समुदाय (समाज) की समस्याओं से अवगत रहें व उनके निवारण का प्रयास करे, तथा

ख) बच्चों के कल्याण से संबंधित स्थानीय व्यावसायिक संगठनों (कार्यक्रमों) में भाग लें।

पाठगत प्रश्न 28.3

बातएं सही या गलतः

1. एक प्ले सेंटर में एक ही अध्यापक पर्याप्त है, चाहे वहां कितने ही बच्चे हों।
2. अध्यापक का कर्तव्य केवल बच्चों को पढ़ाना है।

3. अध्यापक द्वारा घर तथा विद्यालय के मध्य के अंतर को कम किया जाना चाहिए।
4. चूंकि एक प्ले सेंटर बच्चा केन्द्रित होता है इसलिए बच्चों को सिखाने में अध्यापक की कोई भूमिका नहीं होती है।
5. अध्यापक को प्रगतिशील तथा उत्साहवर्धक होना चाहिए।

आपने क्या सीखा

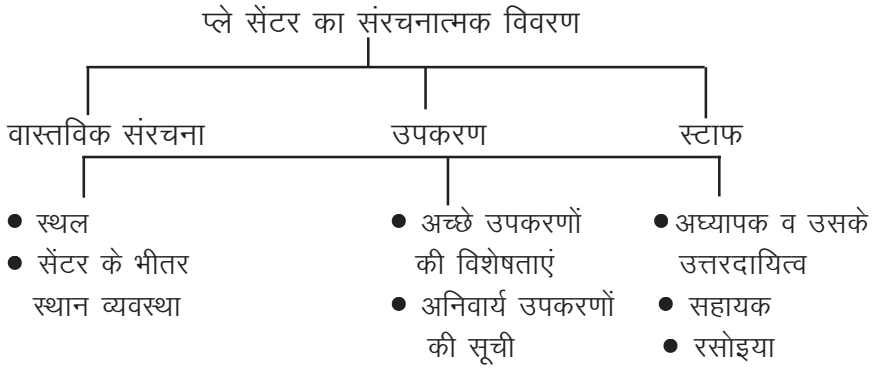

पाठान्त प्रश्न

1. अच्छे उपकरण की अनिवार्य विशेषताएं क्या हैं?
2. एक प्ले सेंटर के अध्यापक के उत्तरदायित्व क्या हैं?
3. किसी प्ले सेंटर का दौरा करें तथा वास्तविक स्थल के प्रयोग का अवलोकन व मूल्यांकन करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

28.1 1. ग 2. ग 3. घ 4. ख 5. ग 6. ख

28.2 1. गलत 2. गलत 3. सही 4. गलत 5. गलत

28.3 1. गलत 2. गलत 3. सही 4. गलत 5. सही

टिप्पणी

29

योजना बनाना और कार्यक्रमों का संचालन

पांच वर्ष से कम आयु के बच्चे सरलता से प्रभावित हो जाते हैं। इन संवेदनशील वर्षों के दौरान उनके भावी व्यक्तित्व की नींव रखी जाती है। इस आयु में जो कुछ भी सीखा जाता है वह इतने गहन रूप से मन–मस्तिष्क में छप जाता है कि बाद के वर्षों में उसे निकाल पाना असम्भव होता है। इसलिए, वयस्कों का यह दायित्व है कि वे बच्चे को समद्ध अनुभव उपलब्ध कराएं तथा अच्छी आदतें विकसित करने, उपयुक्त अभिरुचि तथा जिज्ञासू मस्तिष्क के विकास में सहयोग करें।

अधिकतर प्री–स्कूल प्राथमिक स्कूलां के समान पैटर्न पर ही चलते हैं। यद्यपि यह खेद का विषय है क्योंकि इस आयु के इन छोटे बच्चों की आवश्यकताएं पूर्णतः भिन्न होती हैं तथा इनके विकास में पूर्णतः भिन्न दष्टिकोण की आश्यकता है विशेष रूप से यदि हम इनका इष्टतम विकास करना चाहते हैं तो, इस पाठ में आप प्ले सेंटर में कार्यक्रम नियोजन तथा खेल के माध्यम से शिक्षा के संबंध में अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आपके लिए सम्भव होगाः

- कार्यक्रम नियोजन का वर्णन करना;
- कार्यक्रम नियोजन में शामिल सिद्धान्तों का उल्लेख; अल्पकालीन व दीर्घकालीन नियोजन का उल्लेख करना;
- विभिन्न आयु समूहों (3 वर्ष तथा 3-5 वर्ष) के लिए कार्यक्रम विकसित करना; तथा
- भोजन कार्यक्रम के आयोजन में शामिल चरणों का उल्लेख करना।

29.1 कार्यक्रम नियोजन-अवधारणा व सिद्धान्त

प्ले सेंटर के लिए अपने वांछित लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए कार्यक्रम नियोजन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें प्ले सेंटर के लिए कार्यक्रमों को तैयार करना, अपेक्षित वस्तुओं का संग्रह करना, तथा नियोजित कार्यक्रम का निष्पादन करना शामिल है। पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए कार्यक्रम नियोजन के दौरान कतिपय सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

क) बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना

1. आयु संगत गतिविधियों की योजना

एक बच्चा एक निश्चित आयु में ही कतिपय गतिविधियों के लिए तैयार होता है। यदि उनके तैयार होने से पूर्व बच्चों पर इन गतिविधियों को आरम्भ किया जाएगा तो उनके लिए इनमें निपुणता प्राप्त करना कठिन होगा।

2. उचित समय पर गतिविधि आरम्भ करें

जब बच्चा गतिविधि के लिए तैयार हो तब उसे आरम्भ कीजिए ताकि बच्चा उसे करने में आनन्द का अनुभव करे तथा उसमें निपुण भी हो सके। उदाहरण स्वरूप नये आने वाले बच्चे को बॉल का खेल खिलाना चाहिये अपेक्षा अन्य नियोजित खेलों के।

3. बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कार्यक्रम में लचीलापन होना चाहिए

गतिविधियों की लम्बाई तथा प्रकति बच्चों की रुचि पर निर्भर होनी चाहिए। कभी–कभी बच्चे लम्बी अवधि तक एक गतिविधि में तल्लीन रहते हैं। ऐसे अवसरों पर अध्यापक को अपनी योजना में परिवर्तन करने के लिए तत्पर रहना चाहिए और बच्चे को लम्बी अवधि तक अपना कार्य जारी रखने का अवसर दिया जाना चाहिए। कई बार कुछ जानवरों/पक्षियों (बिल्ली, कुत्ता, गिलहरी, तोता, खरगोश, बंदर) के आने से या बारिश के कारण कार्यक्रम में व्यवधान उत्पन्न होता है। अध्यापक को इस प्रकार की घटनाओं का भी कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाना चाहिए।

4. नियोजित कार्यक्रम अर्थपूर्ण होना चाहिए तथा बच्चों द्वारा अच्छी आदतों, अवधारणाओं व मूल्यों को सीखने में सहायक होना चाहिए

उदाहरण के लिए संगीत व कहानियां बच्चों द्वारा अपनी भाषा विकसित करने में सहायक होती हैं। विशिष्ट जानवरों पर औपचारिक चर्चा द्वारा बच्चों को जानवरों के बारे में सीखने का अवसर प्राप्त होता है। बच्चों के लिए नियोजित प्रत्येक गतिविधि अर्थपूर्ण तथा सामाजिक जीवन से संबंधित होनी चाहिए।

टिप्पणी

5. कार्यक्रम से प्रत्यक्ष व ठोस अनुभव प्राप्त होने चाहिए

उदाहरण के लिए खुदाई करना, जमीन तैयार करना, बीजों को बोना तथा उनमें पानी डालना, ये सब बागवानी से संबंधित प्रत्यक्ष अनुभव हैं। इसके अतिरिक्त उठाना, डालना, भरना, ले जाना, श्रेणी बनाना आदि भी प्रत्यक्ष अनुभव हैं।

6. पुराने अनुभवों को नए अनुभवों से जोड़ें

उदाहरण के लिए, बच्चों को विभिन्न आकार के ब्लॉक उपलब्ध कराइए तथा उनसे कहिए कि वे अपने आस–पास के परिवेश से उसी आकार की वस्तु का पता लगाएं।

7. आराम व नींद के लिए समय दें

बच्चों को आराम व सोने के लिए समय की आवश्यकता होती है। प्ले सेंटर में आराम व नींद के लिए कम से कम डेढ़ घण्टे का समय दिया जाना चाहिए।

ख) कार्यक्रम में विविधता होनी चाहिए

1. गतिविधियां विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं

बच्चों के लिए बनाए गए कार्यक्रमों में गाने, कहानियां, नाटक मंचन, ज्ञानात्मक विकास की गतिविधियां, सजनात्मक गतिविधियां, सुसंगठित खेल, विज्ञान के अनुभव, फील्ड ट्रिप तथा सांस्कतिक कार्यक्रम शामिल होने चाहिए।

2. कार्यक्रमों में व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार की गतिविधियां होनी चाहिए

कार्यक्रम में नियोजित शारीरिक तथा क्रियात्मक गतिविधियों में व्यक्तिगत क्रियाएं जैसे ड्राइंग, पेंटिंग, सजनात्मक खेल आदि होनी चाहिए तथा अपने नेता का अनुसरण करना, खजाने की तलाश आदि जैसे सामूहिक खेलों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

3. स्वच्छंद खेल तथा निर्देशित गतिविधि के बीच सन्तुलन बनाना

बच्चे को वयस्कों के हस्तक्षेप के बिना स्वयं खेल का आनन्द प्राप्त करने के लिए एक निश्चित समय प्रदान किया जाना चाहिए। इससे उन्हें खेल की सामग्री के प्रयोग की विभिन्न सम्भावनाओं को खोजने तथा पता लगाने का अवसर प्राप्त होता है। अध्यापक द्वारा संचालित या मार्गदर्शित खेलों को भी कार्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए जिससे बच्चे में विशिष्ट अवधारणाओं को बढ़ाया जा सकता है।

4. कार्यक्रम में क्रियाशील खेल तथा शांत खेल दोनों की व्यवस्था होनी चाहिए

अत्यधिक शारीरिक गतिविधि बच्चों को थका देती है। इसलिए, कुछ क्रियाशील कार्य के पश्चात कुछ आरामदायक कार्य दिया जाना आवश्यक है। बच्चे हलके कार्य या खेल के पश्चात गतिशील खेलों का मजा ले सकते हैं।

ग) समग्र नियोजन

1. कार्यक्रमों को कतिपय निश्चित विषयवस्तु के अनुसार नियोजित किया जाना चाहिए।

विषयवस्तु विशिष्ट सप्ताह या माह की घटनाओं (गतिविधियों) पर आधारित हो सकते हैं। जनवरी के दूसरे व तीसरे सप्ताह में परियोजना के लिए विषयवस्तु पोंगल (फसल का त्यौहार) हो सकता है क्यों कि इस अवधि में यह त्यौहार आता है। इसी प्रकार मार्च में होली हो सकता है।

प्ले सेंटर कार्यक्रम के लिए कुछ विषयवस्तु

परिवार	रंग	कला प्रदर्शनी
स्वास्थ्य व साफ–सफाई	नदियां	स्वतंत्रता सैनानी
जानवर	पानी	क्रिसमस
पालतू जानवर	पर्वत	दीपावली
घरेलू जानवर	मौसम	रक्षा बंधन
जंगली जानवर	दूध व दूध उत्पाद	दशहरा
कीड़े		गणतंत्र दिवस
पक्षी	प्रकाश	स्वतंत्रता दिवस
पौधे/वक्ष	स्वतंत्रता दिवस	परिवहन
फूल	गांधी जयन्ती	– भूमि
सब्जियां	जन्माष्टमी	– जल
फल	पुलिसमैन	– वायु
धोबी	नर्स	अध्यापक
किसान	बढ़ई	चांद व सूरज
कुम्हार	दर्जी	दिन व रात
माली	डाकिया	हमारा देश
मछुआरा	बुनकर	धातु
सैनिक	ध्वनियां	दिशाएं
गर्म व ठण्डा		चुंबकत्व

2. सेंटर में उपलब्ध सुविधाओं पर विचार करें

प्ले सेंटर के कार्यक्रम की सफलता वहां उपलब्ध सुविधाओं पर निर्भर करती है। इसलिए, प्ले सेंटर में बच्चों के लिए आउटडोर में छायादार क्षेत्र, इनडोर क्षेत्र, उपकरण तथा केयरटेकर जैसी सुविधाओं की उपलब्धता पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए।

3. कार्यक्रम की योजना अग्रिम में बना लें तथा आवश्यक व्यवस्थाएं करें

कार्यक्रम की योजना अग्रिम में बनाने से कार्यक्रम की गतिविधियों के लिए सामग्रियां एकत्रित करने तथा बिना किसी परेशानी या गड़बड़ी, के गतिविधियों के निष्पादन व मूल्यांकन में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए, अग्रिम में एक फिल्म देखने या फील्ड ट्रिप की योजना बनाने से अध्यापक के लिए उसका सफल आयोजन सम्भव हो पाता है।

स्वयं प्रयास करें

एक प्ले सेंटर का दौरा करने तथा वहां उपलब्ध विभिन्न प्रकार की गतिविधियों की सूची तैयार करें।

क्रिया 34.2

एक प्ले सेंटर के अध्यापक का इंटरव्यू लीजिए तथा उनके द्वारा अग्रिम में नियोजित गतिविधियों को रिकार्ड कीजिए।

29.2 दीर्घकालीन तथा अल्पकालीन नियोजन

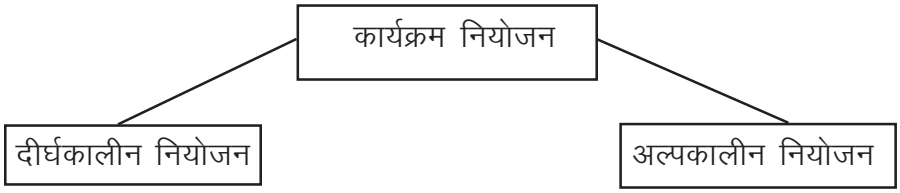

दीर्घकालीन नियोजन

एक सम्पूर्ण वर्ष के लिए कार्यक्रम की अग्रिम में योजना तैयार करने को दीर्घकालीन नियोजन कहते हैं। दीर्घकालीन योजनाएं कार्यक्रम को व्यापक रूप से सुव्यवस्थित बना देती हैं। यह बच्चों के अधिगम अनुभव के लिए नियोजन से संबंधित हैं तथा इन्हें बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं, अध्यापन सुविधाओं, सामग्रियों तथा खेल उपकरणों, वित्त व्यवस्था, सम्पन्न व्यक्तियों से सहयोग आदि को ध्यान में रख कर बनाया जाता है।

दीर्घकालीन नियोजन से नए उपकरणों को खरीदने, पुरानी वस्तुओं को ठीक करने व बदलने में मदद मिलती है।

अल्पकालीन नियोजन

प्रभावपूर्ण कार्य निष्पादन के लिए यह आवश्यक है कि सम्पूर्ण वर्ष के लिए बनाए गए कार्यक्रमों को छाटी इकाइयों यथा एक महीने, एक सप्ताह, एक दिन में विभाजित कर

दिया जाए। विशेष अवसरों के दौरान विभिन्न अनुभव उपलब्ध कराने की आवश्यकता होती है। माहवार नियोजन से अध्यापक को विशेष घटनाएं तथा कार्यक्रम करना सम्भव हो पाता है। इससे कार्यक्रम को लचीला व आवश्यकता आधारित बनाने में मदद मिलती है।

साप्ताहिक नियोजन से कार्यक्रम में विविधता लाने तथा सभी विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहयोग प्राप्त होता है। समय सीमा निर्धारित करने के लिए दिन वार नियोजन आवश्यक है। यहां व्यक्ति को स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि अब क्या किया जाना है तथा अगले आधे घंटे में या उससे अगले घंटे में क्या करना है।

दैनिक कार्यक्रम

एक प्ले सेंटर के दैनिक कार्यक्रम में निम्नलिखित गतिविधियों को शामिल किया जाना चाहिएः

9.00 बजे – 9.30 बजे	बच्चों का आगमन
9.30 बजे – 10.10 बजे	आउटडोर खेल
10.10 बजे – 10.20 बजे	प्रार्थना व औपचारिक चर्चा
10.20 बजे – 10.30 बजे	मध्य प्रातः विराम
10.30 बजे – 10.45 बजे	तैयार होने संबंधी कार्यक्रम–सामान्य
10.45 बजे – 11.00 बजे	संगीत
11.00 बजे – 11.15 बजे	सजनात्मक अनुभव
11.15 बजे – 11.30 बजे	विज्ञान के अनुभव
11.30 बजे – 11.45बजे	सुव्यवस्थित खेल
11.45 बजे – 12.00 बजे	कहानी
12.00 बजे – 2.45 बजे	आराम व सोना
2.45 बजे – 3.00 बजे	शौच–शाम (संध्या) का जलपान
3.00 बजे – 3.30 बजे	आउटडोर खेल तथा प्रस्थान

साप्ताहिक कार्यक्रम

सप्ताह के लिए विषय वस्तु का निर्धारण व नियोजन पहले ही किया जाना चाहिए। बच्चों की व्यक्तिगत तथा सामूहिक आवश्यकताओं के लिए दैनिक गतिविधियों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

टिप्पणी

तालिका 29.1: *प्ले सेंटर के साप्ताहिक कार्यक्रम का उदाहरण*

विषय वस्तुः फूल 4–5 वर्ष

समय	गतिविधियां	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार
9.15 बजे 9.30 बजे	बच्चों का आगमन					
9.30 बजे 10.00 बजे		आउटडोर खेल* इनडोर गतिविधियां शारीरिक व्यायाम/तैयार होने की सामान्य क्रियाएं				
10.00 बजे 10.20 बजे	प्रार्थना औपचारिक चर्चा	फूलों के नाम	फूलों के रंग	फूलों की सुगंध	फूलों के भाग	फूलों के उपयोग
	गाने	'रिंगा रिंगा रोरिंस' फूलों तथा अन्य वस्तुओं से संबंधित गाने				
10.20 बजे 10.45	तैयार होना	कार्यक्रम	लेखन	पढ़ना लेखन	संख्या कार्य	सामान्य अवधारणएं
	व्यायाम	शारीरिक व्यायाम				
10.45	हाथ मुंह धोना व मध्य प्रातः जूस					
11.20– 11.30 बजे	**सजनात्मक गतिविधियां मूल/विशिष्ट विषय वस्तु से संबंधित	क्रायन ड्राइंग फूलों की पंखुड़ियों व पत्तों को चिपकाना	थ्रैड प्रिंटिंग रंग करना, रंगीन कागज से फूल बनाना	ब्लाक प्रिंटिंग फ्लावर प्रिंटिंग	फूलों के बीड्स को धागे में पिरोना	फूलों के डिजाइन
11.30– 11.40	कहानी का समय	फूलों से संबंधित कहानियां सुनाना			फूलों से संबंधित नाटक करना	
11.40– 11.50	विज्ञान के अनुभव	स्टेज को फूलों से सजाना	फूलों के बीजों को बोना	फूल तथा उत्पाद	फूलों को सजाना	एक बागीचे का फील्ड ट्रिप
11.50– 12.15	सुव्यवस्थित खेल फूलों संबंधी खेल					
12.15– 12.45	मुंह हाथ धोना तथा भोजन का कार्यक्रम					
12.45– 2.45	विश्राम व सोना					
2.45	हाथ मुंह धोना व शाम का जलपान					
3.00– 3.30	आउटडोर खेल तथा प्रस्थान					

*झूलों, स्लाइड, जंगल जिम, सैंड, क्ले के साथ खेलना, ट्राइसाईकल, स्कूटर, बॉल व बैट, बैलेंस बोर्ड, सी–सॉ आदि में खेलना।

**सजनात्मक गतिविधियें में शामिल हैं डाल कार्नर में खेलना, निर्माण सामग्री से खेलना, ड्राइंग व पेंटिंग, पेपर कटिंग, फाड़ना व चिपकाना, चित्र निर्माण (कॉलज वर्क) समस्या समाधान, पजल के साथ खेलना, क्ले तथा प्लास्टीसिन खेल, डांस करना, मोतियों को पिरोना आदि।

पाठगत प्रश्न 29.1

1. कार्यक्रम नियोजन को परिभाषित कीजिए।
2. कार्यक्रम नियोजन के सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए।
3. दीर्घकालीन नियोजन तथा अल्पकालीन नियोजन में एक अन्तर तथा एक समानता बताइए।
4. सही विकल्प का चयन कीजिएः

   (i) एक प्ले सेंटर के कार्यक्रम को कैसा होना चाहिए

   क) लचीला

   ख) सख्त

   ग) क्षणिक

   घ) स्थायी

   (ii) कार्यक्रम द्वारा क्या उपलब्ध कराया जाना चाहिए

   क) अच्छे अनुभव

   ख) रोचक अनुभव

   ग) प्रत्यक्ष–तथ्यात्मक अनुभव

   घ) पर्याप्त कौशल

   (iii) कार्यक्रम को किनके मध्य विकल्प उपलब्ध कराना चाहिए

   क) सामाजिक व समानान्तर खेल

   ख) व्यक्तिगत व समानान्तर खेल

   ग) क्रियाशील व शांत खेल

   घ) संबद्ध व सामूहिक खेल

   (iv) जनवरी के अन्तिम सप्ताह के कार्यक्रम के लिए उपयुक्त विषयवस्तु क्या हो सकती है।

   क) जानवर

   ख) राष्ट्रीय नेता

   ग) जल

   घ) फूल

टिप्पणी

5. कार्यक्रम नियोजन के लिए किन्हीं 10 विषयवस्तुओं की सूची बनाइए।
6. एक प्ले सेंटर के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम की योजना तैयार कीजिए।

29.3 भोजन कार्यक्रम का आयोजन

अच्छा आहार अच्छे विकास के आधार स्तंभ के समान होता है। प्ले सेंटर कार्यक्रम में भोजन के प्रावधान के साथ साथ स्नैक्स समय की व्यवस्था भी होनी चाहिए। इस भोजन कार्यक्रम का उद्देश्य मूल रूप से छोटे बच्चों को पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराना है जो उनके सम्पूर्ण आहार की दैनिक आवश्यकता का कम से कम 1/3 आवश्यकता को पूरा करता हो। बच्चे जो कुछ अपने घर से लाते है वह पर्याप्त हो भी सकता है और नहीं भी।

स्कूल में अन्य बच्चों के साथ खाना खाने से बच्चों को शिष्टाचार, साफ सफाई रखना तथा स्वयं भोजन करने की शिक्षा भी मिलती है। इसके अतिरिक्त इससे उन्हें वह सब खाने की आदत पड़ जाती है जो उन्हें परोसा जाता है। अब हम उन कारकों पर विचार करेंगे जिन्हें भोजन कार्यक्रम तैयार करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए। क्या आप कुछ कारकों पर विचार कर सकते हैं? एक कागज लीजिए तथा अपने विचारों को उन पर लिख डालिए अब निम्नलिखित कारकों पर ध्यान दें:

(क) जिन बच्चों को भोजन दिया जाना है उनके शरीर का आकार व उनकी आयु,

(ख) भोजन की उपलब्धता व लागत,

(ग) उन परिवारों की भोजन परम्पराएं तथा रीतिरिवाज, जहां से बच्चे आते हैं, और

(घ) श्रमिकों व पर्यवेक्षीय सेवाओं की उपलब्धता।

भोजन कार्यक्रम के वास्तविक संगठन व आयोजन में निम्नलिखित चरण शामिल हैं:

(i) वित्तीय सहायता प्राप्त करना: क्या आप किसी के बारे में सोच सकते हैं जो नियमित रूप से इस निधि में धन उपलब्ध करा सके? जी हां, इसके अनेक विकल्प हैं। आप इस राशि को माता पिता से ले सकते हैं यदि वे ऐसा करने की क्षमता रखते हैं। आप समुदाय (समाज) से दान में नकद भी प्राप्त कर सकते हैं। स्थानीय, राज्य तथा सरकारी संगठनों से सहायता भी प्राप्त की जा सकती है। कई बार कुछ लोकोपकारक भारी धनराशि से सहायता उपलब्ध करा देते हैं।

(ii) यह सुनिश्चित कर लें कि वहां किचन तथा भोजन संबंधी सेवाओं के लिए स्थान उपलब्ध हो: जैसे कि पहले चर्चा की जा चुकी है इस स्थान को साफ सुथरा व संवातित होना चाहिए। वहां भोजन बनाने, उसके भण्डारण तथा वितरण के लिए स्थान होना चाहिए।

(iii) किचन के उपकरणों को खरीदना: इनकी आवश्यकता खाना बनाने, उसके भण्डारण व वितरण के लिए होती है।

(iv) व्यंजन सूची नियोजन तथा मात्रा का अनुमान लगाना: व्यंजन की सूची बनाते समय निम्न बातों पर ध्यान दें–

- पर्याप्त पौष्टिकता
- उपलब्ध मौसमी भोजन का प्रयोग
- खाना बनाने व परोसने के समय व श्रम का न्यूनतम उपयोग
- पारिवारिक भोजन अभिरुचि के आधार पर विविध व रोचक व्यंजन बनाना
- आकर्षक व पाचन गुणों से भरपूर, तथा
- खाना बनाने की प्रक्रिया में पौष्टिकता का न्यूनतम ह्रास।

भोजन कार्यक्रम के लिए व्यंजन सूची तैयार करने में शामिल चरण

क्या आप 0-6 वर्ष की आयु के बच्चों की पौष्टिकता संबंधी आवश्यकताओं के बारे में जानते हैं। आई सी एम आर (भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद) ने आर डी ए (रिकमंडिड डेली अलावेंस) उपलब्ध कराया है।

(i) भोजन आवश्यकताओं की गणना

छह वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) द्वारा संस्तुत फूड एलावेंस भोजन भत्ते में से प्रत्येक बच्चे की दैनिक आवश्यकता के एक तिहाई की गणना की जाती है तथा उसे बच्चों की कुल संख्या से गुणा करके प्ले सेंटर में बच्चों के लिए बनाए जाने वाले भोजन की कुल मात्रा निकाली जाती है।

तालिका 29.2: *एक दिन के लिए संस्तुत भोजन की मात्राएं*

भोजन की मदें	एक दिन के लिए आवश्यकता (ग्राम में)	
	1-3 वर्ष	4-6 वर्ष
अन्न	175	270
दालें	35	35
पत्तेदार सब्जियां	40	50
अन्य सब्जियां	20	30
जड़ें व कन्द	10	30
दूध	300	250
तेल व फैट	15	25
चीनी व गुड़	30	40

टिप्पणी

(ii) पौष्टिकता की आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिए भोजन का चयन

अगला चरण है भोजन का चयन जो पौष्टिकता की आवश्यकता को पूरा करें, तथा प्राथमिकता स्थानीय, निम्न लागत व पौष्टिक मौसमी भोजन को दी जानी चाहिए।

(iii) व्यंजन सूची नियोजन

अगला चरण है भोजन उत्पादों की सूची का चयन, जो बच्चों के स्वाद के अनुसार तथा तैयार करने में आसान होना चाहिए। इससे बच्चे उन्हें आसानी से खा सकेंगे।

(iv) पकाये जाने वाले भोजन की अनुमानित मात्राएं

व्यंजन सूची का निर्धारण करने के पश्चात यह महत्वपूर्ण है कि बच्चों की संख्या के अनुसार पकाए जाने वाली मात्राओं का अनुमान लगाया जाए। आप जानते हैं कि इसका निर्णय कैसे लिया जाता है।

(v) सामग्रियों की प्राप्ति व भण्डारण

अपेक्षित सामग्रियों की मात्रा, चयन, खरीद व भण्डार के अनुमान की क्रिया पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। सामग्रियों की अनुमानित मात्राओं को उनकी भण्डारणियता तथा भण्डार के लिए उपलब्ध पात्रों के आधार पर मासिक, पाक्षिक साप्ताहिक तथा दैनिक खरीदों में वर्गीकत किया जा सकता है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि कुछ भोजन शीघ्र खराब होने वाले होते हैं तथा कुछ लम्बे समय तक चल जाते हैं। शीघ्र खराब होने वाली मदों को दैनिक आधार पर तथा कम मात्रा में खरीदा जाना चाहिए। अन्य सामग्रियों को भारी मात्रा में लाया व भण्डारित किया जा सकता है।

(vi) पकाने का प्रशिक्षण

प्रशिक्षण खाना पकाने की प्रक्रियाओं, भोजन तैयार करने व परोसने के लिए प्रयुक्त स्वस्थ तकनीकों से संबंधित होना चाहिए। क्या आप बता सकते हैं कि ये सब महत्वपूर्ण क्यों है? जी हाँ, छोटे बच्चे भोजन के संक्रमण के प्रति अति संवेदनशील होते हैं तथा किसी भी कीमत पर बच्चों को इनसे बचना चाहिए। इसके अतिरिक्त तैयार किया गया भोजन पर्याप्त रूप से पौष्टिक होना चाहिए।

(vii) लंच क्षेत्र में साफ-सफाई बनाए रखना

किचन, लंच क्षेत्र, बरतन धोने का स्थान, खाना बनाने व परोसने के बर्तनों आदि को साफ सुथरा बनाए रखने के लिए विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। क्या होगा यदि ये सब साफ न रहें?

(viii) पोषण शिक्षण संबंधी गतिविधियां आयोजित करना

किसी भी भोजन संबंधी कार्यक्रम में पोषण शिक्षण को भी शामिल किया जाना चाहिए ताकि इस कार्यक्रम को प्रभावी बनाया जा सके। एक प्ले सेंटर में भोजन कार्यक्रम द्वारा बच्चों को न केवल भोजन की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध कराई जानी चाहिए बल्कि बच्चों को भोजन, पौष्टिकता तथा स्वास्थ्य के साथ इनके संबंध व पर्यावरणीय साफ सफाई का ज्ञान उपलब्ध कराने में भी सहायक होना चाहिए।

कुपोषण से लड़ने के लिए पोषण संबंधी शिक्षण आवश्यक है। पोषण संबंधी शिक्षा बच्चों व माता पिता को उपलब्ध खाद्य संसाधनों के कुशल उपयोग द्वारा उनके स्वास्थ्य तथा पौष्टिकता के स्तर में सुधार लाने के उद्देश्य से भोजन की उनकी पद्धतियों में संशोधन की ओर अग्रसर होने पर बल देता है।

माताएं पौष्टिकता के मूल सिद्धान्तों, खाना बनाने की वांछित पद्धतियों तथा सर्वाधिक पौष्टिकता बनाए रखने के भोजन पकाने के तथ्यों से अनभिज्ञ हो सकती हैं, इसलिए शिक्षा की आवश्यकता है।

पाठगत प्रश्न 29.2

1. भोजन कार्यक्रम को परिभाषित करें।
2. भोजन कार्यक्रम के एक कार्य का उल्लेख करें।
3. भोजन कार्यक्रम तैयार करते समय ध्यान में रखे जाने वाले चार बिन्दु बताइए।
4. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:

   (i) एक भोजन कार्यक्रम में अनिवार्य रूप से एक प्रशिक्षित ..... होना चाहिए।

   क) अध्यापक

   ख) रसोइया

   ग) सहायक

   घ) कार्यकर्ता

   (ii) भोजन की अनुमानित मात्रा का निर्धारण ..... किया जाना चाहिए।

   क) भोजन पकाने से पूर्व

   ख) सामग्री खरीदने से पूर्व

   ग) भोजन परोसने से पूर्व

   घ) भण्डारण से पूर्व

टिप्पणी

(iii) भोजन कार्यक्रम को जब ..... के साथ जोड़ा जाता है तो वह और अधिक सफल होता है।

क) स्वास्थ्य जांच

ख) पोषण शिक्षा

ग) प्राप्ति कार्यक्रम

घ) साफ–सफाई कार्यक्रम

5. कॉलम 'क' की सूचना को कालम 'ख' से जोडें:

भोजन मदें	**संस्तुत दैनिक अलावेंस** (1-3 वर्ष की आयु के लिए ग्राम में)
1.पत्तेदार सब्जियां	(i) 300
2. दूध	(ii) 35
3.जड़ वाली सब्जियां	(iii) 20
4.दालें	(iv) 10
5.अनाज	(v) 30
	(vi) 175
	(vii) 40

आपने क्या सीखा

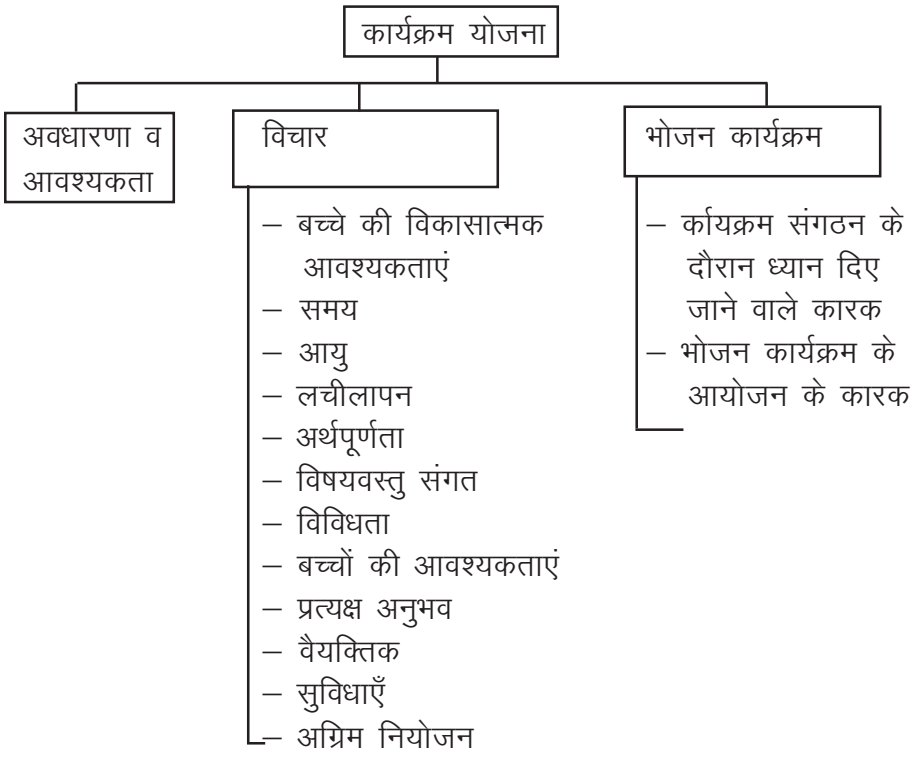

पाठांत प्रश्न

1. प्ले सेंटर में विभिन्न आयु समूहों के लिए टाइटलों तथा विषयवस्तु की एक सूची तैयार कीजिए।
2. अपने समीपवर्ती प्ले सेंटर में जाइए तथा उनके एक सप्ताह की व्यंजन सूची को नोट कीजिए। व्यंजन सूची नियोजन में शामिल कारकों के आधार पर उनका विश्लेषण कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1

1. पाठ का संदर्भ लें
2. पाठ का संदर्भ लें
3. **अन्तरः** दीर्घकालीन नियोजन अग्रिम में ही पूरे वर्ष के लिए तैयार कर दी जाती है जबकि अल्पकालीन नियोजन अल्पकाल में तत्काल आवश्यकताओं को पूरा करने से संबंधित है तथा विविधता लाने में सहायक होती है।

   समानताः नियोजन बच्चों की सभी विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होती है।

1. (i) (क) (ii) (ग) (iii) (ग) (iv) (ख)

29.2

1. पाठ का संदर्भ लें
2. भोजन कार्यक्रम का प्रमुख कार्य छोटे बच्चों को पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराना है जो उनकी सम्पूर्ण पौष्टिकता की दैनिक आवश्यकता से कम से कम एक तिहाई आवश्यकता को पूरी करे।
3. पाठ का संदर्भ लें
4. (i) (ख) (ii) (ख) (iii) (ख)
5. 1. (vii) 2. (i) 3. (iv) 4. (ii) 5. (vi)

30

खेल केन्द्र में माता-पिता और समुदाय की संलग्नता

बच्चों के विकास को दिशा प्रदान करने का कार्य एक सहयोगी प्रयास है, एक दो मार्गीय प्रक्रिया माता पिता तथा अध्यापकों के मध्य; प्ले सेंटर तथा घर के मध्य। कोई भी पक्ष बिना दूसरे पक्ष के समन्वय, समर्थन व सहयोग के प्रभावपूर्ण रूप से कार्य नहीं कर सकता है। उपयुक्त मार्गदर्शन के लिए मातापिता तथा अध्यापकों द्वारा बच्चे को समग्र रूप से देखे जाने की आवश्यकता है। इस अवधि के दौरान अध्यापक तथा माता पिता के संबंधों की गुणवत्ता आगे जीवन भर बच्चे को प्रभावित करती है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आपके लिए सम्भव होगाः

- प्ले सेंटर व घर के संबंधों की आवश्यकता को समझना;
- प्ले सेंटर मे माता पिता की साझेदारी (भूमिका) के अवसर तथा पद्धतियों को समझना;
- प्ले सेंटर में समुदाय की भागीदारी के महत्व को समझना;
- प्ले सेंटर में महिला मण्डलों की भूमिका का उल्लेख करना; तथा
- सहायक सेवाओं का पता लगाना।

30.1 खेल केन्द्र तथा घर के संबंध

बच्चों के व्यक्तित्व विकास में परिवार की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह प्ले सेंटर के भीतर तथा बाहर अनेक महत्वपूर्ण विशेषताओं के विकास के लिए आधार उपलब्ध

कराता है। बच्चे के लिए माता पिता ही पहले सामाजिकरण कड़ी के रूप में उपलब्ध होते हैं। तत्पश्चात प्ले सेंटर/प्री–स्कूल कार्मिक आते हैं। इसलिए, प्ले सेंटर तथा घर दोनों को एक–दूसरे के साथ उचित समन्वय सहित कुशलतापूर्वक व सहयोगात्मक भाव के साथ कार्य करने की आवश्यकता होती है। एक अध्यापक तब तक बच्चे की रुचियों, आवश्यकताओं तथा प्रोत्साहन को नहीं समझ सकता है जब तक उसे बच्चे के घर का प्रारम्भिक ज्ञान न हो। जब अध्यापक मातापिता के साथ मिलकर कार्य करेंगे तभी वे प्ले सेंटरों में स्वस्थ तथा अनुकूल वातावरण का निर्माण कर पाएंगे।

30.2 महत्व

प्ले सेंटर के संबंध निम्नलिखित के सजन/निर्माण में सहायक होते हैं:

- बच्चे की रुचि का अनुमान लगाकर मातापिता तथा अध्यापकों के मध्य बेहतर समझ का सजन,
- एक प्ले सेंटर क्या है, इस संबंध में बेहतर समझ का सजन
- माता पिताओं के लिए अन्य बच्चों के माता पिता से मिलना व उनके अनुभवों से सीखने का अवसर, तथा
- बच्चे के पालन–पोषण तथा प्रशिक्षण में विकसित नई तकनीकों को समझना

यदि इन लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया जाता है तो बच्चों को प्ले सेंटर पर तथा घर पर पोषक, समद्ध तथा सम्पूर्ण जीवन प्राप्त हो पाएगा। इसके लिए माता पिता तक नए रुझानों को सम्प्रेषित करने के लिए अध्यापक सर्वोत्तम कड़ी हैं।

30.3 खेल-केन्द्र तथा घर के संबंधों को प्रभावशाली कैसे बनाएं

प्ले सेंटर तथा घर के संबंधों को प्रभावशाली बनाने के लिए एक अध्यापक को:

- प्रत्येक माता पिता की आवश्यकताओं, भावनाओं तथा उम्मीदों को समझना चाहिए,
- इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि माता पिता क्या जानना चाहते हैं,
- अपने बच्चों के संबंध में मातापिता की आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए तथा उनसे अच्छा सहयोग प्राप्त करना चाहिए।
- मातापिता जैसे भी हों उनका आदर करें।
- मातापिता के साथ सुविधाजनक, स्वतंत्र तथा मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखें।

टिप्पणी

- मातापिता से भी सीखने को तत्पर रहे।
- इस तथ्य का उजागर करना चाहिए कि अध्यापक बच्चे का कल्याण करना चाहता है तथा अपना कार्य अधिक कुशलतापूर्वक करने के लिए मातापिता का सहयोग चाहता है। अपना बचाव करने की अपेक्षा अभिभावकों को आरामदेह सुविधा प्रदान कराना।
- मातापिता के सुझावों को स्वीकार करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।
- एक अच्छा श्रोता बनना चाहिए तथा मातापिता को सम्प्रेषण के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- बच्चे की उपस्थिति में माता पिता के साथ बच्चे के संबंध में चर्चा से बचना चाहिए।
- तत्काल परिणामों पर नहीं पहुंचना चाहिए या तत्काल टिप्पणियां नहीं करनी चाहिए।
- सकारात्मक दष्टिकोण रखना चाहिए तथा बच्चों के प्रति कम आलोचनात्मक होना चाहिए।
- धैर्यपूर्ण रहना चाहिए तथा बच्चे की तुलना अन्य बच्चों से नहीं करनी चाहिए, तथा
- बच्चों पर रौब तथा अपना आधिपत्य न थोपें।

एक मजबूत तथा प्रभावी प्ले सेंटर घर संबंधों को बनाए रखने के लिए अध्यापक को अभिभावकों के साथ सकारात्मक संबंधों की स्थापना करनी चाहिए।

स्वयं प्रयास करें

अपने किसी समीपवर्ती प्ले सेंटर/प्ले स्कूल के अध्यापक से पता लगाएं कि वे मातापिताओं से अच्छे संबंध स्थापित करने के लिए क्या प्रयास करते हैं।

पाठगत प्रश्न 30.2

1. रिक्त स्थान भरें:

   (क) बच्चों के विकास में ..... प्रथम व सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

   (ख) मातापिता को शिक्षा प्रणाली के नए रुझानों का ज्ञान ..... से प्राप्त होता है।

   (ग) बच्चों से संव्यवहार करते समय अध्यापकों की ..... प्रवति होनी चाहिए।

   (घ) अध्यापक द्वारा मातापिता को उसी रूप में ..... किया जाना चाहिए जैसे वे हैं।

टिप्पणी

2. निम्नलिखित का उत्तर एक शब्द में दीजिए:

   (i) बच्चे के लिए प्रथम सामाजिकरण कड़ी का नाम बताइए।

   (ii) बच्चे को सबसे अच्छी तरह से कौन समझ सकता है।

   (iii) बच्चे की भावनाओं तथा कौशलों को अभिव्यक्ति कौन प्रदान कर सकता है।

   (iv) जब आप बच्चे के संबंध में मातापिता से चर्चा कर रहे हों तो वहां से किसे बाहर भेजा जाना चाहिए?

30.4 माता पिता की भागीदारी

प्ले सेंटरों में देखरेखकर्ता/अध्यापक अधिकतर दूसरे अभिभावक के रूप में कार्य करते हैं। यहां ध्यान रखने वालों का मातापिता के साथ मजबूत रिश्ता होना चाहिए तथा यह रिश्ता आपसी आदर व विश्वास पर आधारित होना चाहिए। बच्चा मातापिता तथा देखरेखकर्ता को एक संयुक्त उद्देश्य हेतु नजदीक लाता है।

प्ले सेंटरों का विस्तार घर तक होना चाहिए तथा घर के पूरक के रूप में कार्य करना चाहिए। इसलिए अभिभावकों के लिए कार्यक्रम प्ले–सेंटरों का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

बहरहाल, प्ले–सेंटर कितने ही कुशल क्यों न हों वे मातापिता के साथ गहन सहयोग में कार्य किए बिना बच्चों का इष्टतम विकास नही कर सकते हैं।

एक प्ले सेंटर में मातापिता की साझेदारी का क्षेत्र

मातापिता की साझेदारी की प्रक्रिया, उनकी साझेदारी को वास्तविक स्वरूप प्रदान करके मातापिता को उनकी शक्तियों, उनकी क्षमताओं तथा कौशलों से अवगत कराने तथा लाभप्रद रूप से उनका प्रयोग करने में सहायता उपलब्ध कराने की प्रक्रिया है।

मातापिता की साझेदारी से:

1. प्ले सेंटरों के बजटों पर वित्तीय भार में कमी प्रदत्त कर्मिकों की कमी को पूरा कर देते हैं।
2. अध्यापकों के लिए अभिभावकों की सहायता से अधिक अर्थपूर्ण तथा वैयक्तिक नाटक गतिविधियों को आयोजित करना सम्भव हो पाता है।
3. मातापिता प्रभावपूर्ण ढंग से अपनी भूमिका निभाने के लिए नई बातें सीखते हैं तथा बेहतर ढंग से संसाधित हो पाते हैं।

टिप्पणी

30.5 मातापिता की सन्नलिप्तताः पद्धतियां

(क) **अनौपचारिक वार्ताः** अध्यापक मातापिता से उस समय मिलते हैं जब वे सुबह बच्चों को प्ले सेंटर छोड़ने आते हैं तथा दोपहर में उन्हें लेने आते हैं। अभिभावकों के साथ अनौपचारिक वार्ता के द्वारा आपसी संबंध स्थापित किए जा सकते हैं।

(ख) **अभिभावकों की बैठकः** अभिभावकों की नियमित बैठकें अभिभावकों के लिए औपचारिक तथा औपचारिक रूप से प्ले सेंटर के लक्ष्यों, गतिविधियों को समझने तथा उनका मूल्यांकन करने के साधन हैं। अभिभावकों को प्रशिक्षित करने के लिए वक्तव्यों, प्रदर्शनियों, संवाद तथा सहायक उपकरणों यथा फिल्मों, कैसिटों, पुस्तकों, मॉडलों, प्रदर्शनियों व कटपुतलियेां का प्रयोग किया जा सकता है।

(ग) **सामाजिक समारोहः** पिकनिक तथा फील्ड ट्रिप में बच्चों के साथ जाने से अभिभावकों को अध्यापकों को जानने का अवसर प्राप्त होता है और वे मित्रतापूर्ण नेटवर्क व सहयोग स्थापित कर सकते हैं। कई माताएं स्वेच्छा से आगे आकर बच्चों को सम्हालने के लिए अध्यापक की सहायता कर सकती हैं। यह उनके लिए विभिन्न स्तरों पर बच्चों की उत्सुकता व सजनात्मकता को कैसे विकसित किया जाए, इसे समझने का प्रत्यक्ष अनुभव के रूप में है। प्ले सेंटरों में त्यौहारों तथा खेलों का आयोजन इस प्रकार से किया जा सकता है कि बच्चे व उनके अभिभावक दोनों इनका आनन्द उठा सकें।

(घ) **घर का दौराः** अपेक्षित सूचना को एकत्र करने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका है बच्चे के घर जाना। अध्यापक अभिभावकों से बात करके उन्हें सूचित कर सकता है कि वह उनके घर आएगा। इससे अध्यापक बच्चे के घर की व्यवस्था को समझने तथा उपयुक्त रूप से बच्चे की मदद करने का प्रयास करता है।

(ङ) **अभिभावकों को शिक्षित करनाः** अभिभावक प्ले सेंटरों द्वारा महीने में एक बार या दो महीने में एक बार आयोजित शैक्षणिक कक्षाओं की सहायता से आपस में मिल सकते हैं तथा ज्ञान व विभिन्न कौशलों को प्राप्त कर सकते हैं। इन बैठकों/कक्षाओं को अभिभावकों द्वारा दिए गए विषय–वस्तु के आधार पर आयोजित किया जा सकता है। प्रतिरक्षण, ओरल रीहाइड्रेशन थैरेपी, बच्चों के लिए कहानियां तथा व्यर्थ सामग्री से खिलौने बनाना जैसे विषय अभिभावकों के लिए लाभप्रद होंगे।

(च) **व्यक्तिगत चर्चाः** कुछ मातापिता बैठक में अपने बच्चों की समस्याओं पर चर्चा करना पसंद नहीं कर सकते हैं, किन्तु अकेले में अध्यापक के साथ स्वच्छंद रूप से उस विषय पर चर्चा कर सकते हैं। ऐसे अभिभावकों को यदि अध्यापक से चर्चा करने का अवसर प्रदान किया जाए तो इससे अध्यापक को बच्चों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। व्यक्तिगत वार्ता या चर्चा की योजना भी बनाई जा सकती है या अनौपचारिक रूप से भी इस कार्य को किया जा सकता है।

सभी अभिभावक इस प्रकार की प्रक्रिया में सम्मिलित नहीं होना चाहते हैं। ऐसे अभिभावकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें सहयोग के लिये प्रेरित करना चाहिए। जब अभिभावक प्ले सेंटर में सहयोग का निर्णय करेंगे तो वे प्ले सेंटर के प्रति जिम्मेदारी निभायेंगे एवं उत्तरदायी होंगे।

सहयोगी अभिभावकों के समूह की सहायता से अध्यापक पूरे वर्ष के लिए अभिभावकों के कार्यक्रम को तैयार कर सकते हैं तथा उन्हें उपयुक्त कार्य सौंप सकते हैं। वर्ष के अन्त में अध्यापक उनके कार्य की समीक्षा करेंगे तथा देखेंगे कि किन अभिभावकों के कार्यक्रम सफल रहे और कौन से अभिभावक असफल हुए। इस प्रक्रिया से भविष्य में अभिभावकों की साझेदारी की बेहतर योजना बनाई जा सकेगी।

स्वयं प्रयास करें

1. अभिभावकों के चार समूहों से मिलें तथा उनसे पता लगाएं कि वे अपने बच्चे के प्ले सेंटर में किन मुद्दों पर चर्चा करना चाहते हैं।
2. किन्हीं दो घरों का दौरा करें तथा वहां अभिभावकों से जानें कि वे बच्चों के प्ले सेंटर में किस रूप में शामिल होना चाहते हैं।

पाठगत प्रश्न 30.2

1. रिक्त स्थान भरें

   क) ..... बच्चे के दूसरे अभिभावक हैं।

   ख) अध्यापक तब तक बच्चे को समझ नहीं सकता जब तक वह बच्चों के घर का ..... प्राप्त नहीं करता।

   ग) बच्चे के ..... घर में बच्चे के जीवन की बेहतर सूचना प्राप्त हो पाती है।

   घ) अभिभावकों की बैठक ..... रूप से आयोजित की जानी चाहिए।

   ङ) प्रभावी प्ले सेंटर – घर के संबंधों के लिए अध्यापक द्वारा ..... की साझेदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. अध्यापक अभिभावक की संलिप्तता की विभिन्न पद्धतियों के नाम बताइए।

30.6 समुदाय की संलिप्तता

समुदाय में आस–पास के पड़ोस के परिवारों के सदस्य, समुदायिक कार्यकर्ता तथा विभिन्न संस्थानों में कार्यरत कार्मिक शामिल हैं। एक अध्यापक के लिए उस समुदाय को

टिप्पणी

समझना अनिवार्य है जिसे प्ले सेंटर पोषित करता है। अध्यापक द्वारा स्वयं से कुछ प्रश्न पूछने चाहिए तथा समुदाय के परिवारों के साथ उन प्रश्नों पर चर्चा करनी चाहिए।

- क्या समुदाय के बच्चे स्वस्थ तथा सुपोषित हैं? उनके द्वारा किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?
- परिवारों की खाने की आदतें क्या हैं?
- उनकी वरीयताएं क्या हैं? क्या मांएं अपने बच्चों को अपना दूध पिलाती हैं? क्या वे नवदुग्ध को फेंक देती हैं? वे अपने बच्चे को अर्ध–ठोस आहार देना कब आरम्भ करती हैं? क्या वे हरे पत्तियों वाली सब्जियां तथा पीले फल खाती हैं तथा इन्हें अपने बच्चों को भी देती हैं?
- क्या अभिभावक उन्हें खेलने की अनुमति देते हैं?
- उनके बच्चों के समक्ष खेलने की क्या सुविधाएं उपलब्ध हैं?
- क्या उन्होंने अपने बच्चों को असंक्रमीकत कराया है? यदि नहीं, तो क्यों।
- परिवार प्री–स्कूल सुविधाओं का उपयोग कैसे करते हैं?
- क्या समुदाय में कोई प्राइमरी विद्यालय है।
- समुदाय में पर्यावरणीय साफ–सफाई की क्या स्थिति है?
- समुदाय में पयेजल का स्रोत क्या है? क्या वह सुरक्षित है? क्या उसके कारण अतिसार या अन्य बीमारियां होती हैं?
- क्या आपके क्षेत्र में कोई सामान्य बीमारियां या महामारी की समस्या है? उन्हें नियंत्रित करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?
- क्या आपके समुदाय में किसी प्रकार का विकासात्मक कार्यक्रम चल रहा है?
- आपके यहां समुदाय नेता कौन है तथा प्ले–केन्द्रों में कौन से संगठन कार्यरत हैं?

यदि आप एक बार फिर इन प्रश्नों को देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि इन प्रश्नों के उत्तर आपको समुदाय के संबंध में एक बेहतर जानकारी उपलब्ध कराते हैं, जो कि प्ले–सेंटर के एक अध्यापक के लिए अति महत्वपूर्ण है।

स्वयं करके देखें

एक ऐसे समुदाय का दौरा करें जहां एक प्री स्कूल हो तथा तैयार की गई जांच सूची की सहायता से इसकी विशेषताओं तथा संसाधनों का पता लगाएं। इन्हें अपनी रिकार्ड बुक में दर्ज करें।

30.7 समुदाय के अन्य सदस्य

समुदाय के सदस्य, माताएं, बड़ी लड़कियां व लड़के को भी प्ले–केन्द्र को चलाने के विभिन्न पहलुओं में शामिल किया जा सकता है। ये पहलू निम्नानुसार हैं:

- प्ले सेंटर को साफ व सुरक्षित बनाए रखना।
- प्ले सेंटर में एक बागीचा विकसित करना।
- प्ले सेंटर के लिए सुरक्षित पेय जल की आपूर्ति सुनिश्चित करना।
- पौष्टिक भोजन बनाना व बच्चों को उपलब्ध कराना।
- बैठकों व शैक्षिक कक्षाओं के लिए माताओं तथा अन्य लोगों को एकत्र करना।
- बच्चों को गाने, खेल, कहानियां तथा नाटक के आयोजन आदि के सहायता से प्ले सेंटर में सहयोग देना।
- प्ले सेंटर में त्यौहारों का आयोजन करना।
- प्ले सेंटर को उपयुक्त रूप से संसाधित करने में समुदाय की मदद करना (यथा प्ले सेंटर के क्षेत्र के चारों ओर तारें लगाना)।
- अध्यापक को उनकी गतिविधियों में सहयोग करना।
- केन्द्र के खेल के उपकरणों को अनुरक्षित रखने में सहयोग देना।

इस प्रकार समुदाय के सदस्य प्ले सेंटर की प्रत्येक गतिविधि में सम्मिलित हो सकते हैं।

30.8 समुदाय का अंशदान

समुदाय प्ले सेंटरों को संसाधनों के अंशदान द्वारा भी अपना सहयोग उपलब्ध करा सकते हैं, जो निम्नानुसार हैं:

क) खाद्य सामग्री जैसे अनाज तथा दालें उपलब्ध कराकर, इन्हें फसल की पैदावार के समय खरीदा जा सकता है ।

ख) स्थानीय सब्जियां, विशेष रूप से हरी पत्ते वाली तथा पीली सब्जियां।

ग) स्थानीय फल।

घ) प्ले सेंटर के लिए उपकरण जैसे पुराने टायर, लकड़ी के बीम आदि।

ङ) घरों से या कारीगरों से व्यर्थ सामग्री, जैसे प्लास्टिक के खाली बक्से, डिब्बे, पुराने खिलौने, कपड़ें के टुकड़े, ऊन, पुराने अखबार, पत्रिकाएं, लकड़ी के टुकड़े, चिकनी मिट्टी और अन्य वस्तुएं।

च) नकद दानः ध्यान रखें कि किसी प्रकार की नकद प्राप्ति व उसके उपयोग का ध्यानपूर्वक रिकार्ड रखा जाना चाहिए।

टिप्पणी

समुदाय की सन्नलिप्तता का आकलन व्यक्तियों, स्थानीय लोगों, संस्थानों तथा संगठनों द्वारा एक प्ले सेंटर को स्थापित करने तथा उसे चलाने संबंधी सक्रिय भागीदारी की दष्टि से किया जा सकता है। स्थानीय समुदाय की संलिप्तता को उनके द्वारा प्ले सेंटर को स्थापित करने के लिए उपलब्ध किए जाने वाली भूमि, भवन, भोजन, ईंधन, श्रम, सामग्री तथा नकद के रूप में अंशदान की एक क्रिया है।

समुदाय की प्रगतिशील संलिप्तता स्थानीय संसाधनों को जुटाने का उनके उपयोग में वद्धि, व्यक्तियों तथा हितकारियों द्वारा अंशदान व साझेदारी में वद्धि से प्रदर्शित होती है।

30.9 प्ले सेंटरों को चलाने में महिला मंडलों की भूमिका

महिला मंडल पंजीकत स्थानीय महिला संगठन हैं। ये मंडल एक प्ले सेंटर को चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

- प्ले सेंटर के सहयोग के लिए अभिभावकों का उत्साह बढ़ाकर, उन्हें प्ले सेंटरों में अपने बच्चों को भेजने के लिए प्रोत्साहित करके तथा प्ले स्कूल के लिए सहायक उपकरण, खेल की सामग्री एकत्र करना।
- नियमित रूप से बैठकें आयोजित करना।
- छोटे बच्चों के लिए प्ले सेंटरों के महत्व के संबंध में अपने समुदाय में जागरूकता उत्पन्न करना।
- प्ले सेंटर के सफल संचालन के लिए समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

30.10 सहायक सेवाएं

एक प्ले सेंटर के संचालन में समाज का सहयोग एक महत्वपूर्ण कारक है। 'सहयोग सेवाओं' से तात्पर्य सामाजिक नेटवर्क की प्रकति और स्तर से है जिस तक व्यक्ति की पहुंच होती है। कोई व्यक्ति जिसका व्यापक समर्थन होता है वह अनेक व्यक्तियों का प्रोत्साहन, सलाह तथा सहयोग प्राप्त कर सकता है।

एक प्ले सेंटर को स्थापित करने में सहयोग करने वाले संगठन हैं:

- केन्द्रीय सामाजिक कल्याण बोर्ड, नई दिल्ली
- भारतीय बाल कल्याण परिषद, नई दिल्ली
- विभिन्न राज्यों में सामाजिक कल्याण निदेशालय

ये संगठन जरूरतमंद बच्चों के समूहों के लिए बने प्ले सेंटरों/क्रच/प्री–स्कूल को प्रयोजित करते हैं।

पाठगत प्रश्न 30.3

1. रिक्त स्थान को भरें:

   क) प्ले सेंटर में अभिभावकों द्वारा ..... को सहयोग दिया जाना चाहिए।

   ख) समुदाय की भागीदारी उसके द्वारा स्थानीय संसाधनों को ..... के स्तर से परिलक्षित होती है।

   ग) फसल के दौरान समुदाय द्वारा ..... व ..... उपलब्ध कराई जा सकती है।

   घ) ..... एक पंजीकत स्थानीय महिला संगठन है।

2. बताएं सही या गलतः

   क) एक प्ले सेंटर के संचालन में सामाजिक सहयोग महत्वपूर्ण संरक्षक कारक नहीं है। सही/गलत

   ख) सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने में महिला मंडल प्रभावपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। सही/गलत

   ग) प्ले सेंटर में एक बाग को विकसित करना पूर्णतया समुदाय का प्रयास है। सही/गलत

   घ) समुदाय द्वारा पुराने टायर, लकड़ी के खम्भ प्ले सेंटर को उपलब्ध कराए जा सकते हैं। सही/गलत

आपने क्या सीखा

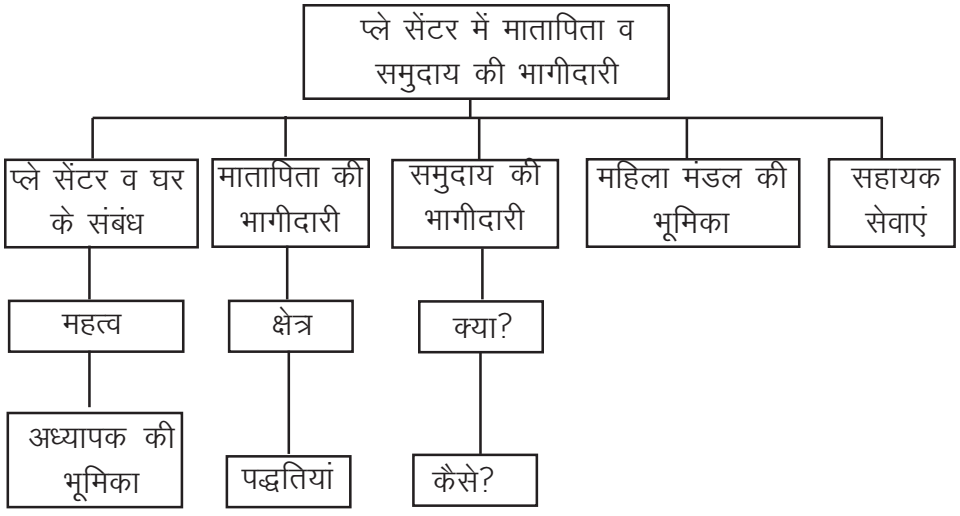

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. मातापिता की भागीदारी की विभिन्न पद्धतियों की सूची बनवाएं जिन्हें प्ले सेंटर द्वारा अपनाया जा सकता है?
2. एक महिला मंडल प्ले सेंटर की कैसे मदद कर सकता है?
3. एक प्ले सेंटर के अध्यापक का साक्षात्कार लीजिए तथा पता लगाइए कि समुदाय की भागीदारी के लिए क्या कार्यक्रम बनाए गए हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

30.1

1. क) मातापिता　　ख) अध्यापक
   ग) सकारात्मक　　घ) आदर
2. (i) मातापिता　　(ii) मातापिता
   (iii) अध्यापक　　(iv) बच्चा

30.2

1. क) अध्यापक　　ख) ज्ञान
   ग) घर का दौरा　　घ) नियमित
   ङ) मातापिता
2. पाठ का संदर्भ लें

30.3

1. क) अध्यापक　　ख) जुटाना
   ग) अनाज व दालें　　घ) महिला मंडल
2. क) गलत　　ख) सही
   ग) सही　　घ) सही